कान इतनी जोर से उमेठा था जैसे घड़ी में चाबी भर रही.

"कोई चिंता नहीं. मैं जा कर ताला ही देखना चाहता हूं." दादाजी बोले.

"दादाजी, इस छोटे से काम के लिए आप हमें कष्ट क्यों देते हैं? आप जाइए और जितनी देर इच्छा हो, शौक से ताला देखिए. अलीगढ़ का बना काफी हट्टा-कट्टा ताला है?" राजू ने समझाया.

"तुम बहस में उलझते हो या तैयार होते हो?" दादाजी ने धमकी दी.

हार कर बच्चे तैयार होने लगे. दादाजी ने स्वयं नहा कर प्रेस किया हुआ धोती-कुर्ता पहना और उनके साथ स्कूल चल दिए. रास्ते में और भी कई बच्चे साथ हो लिये.

स्कूल के गेट पर सचमुच ही काफी बड़ा ताला लगा हुआ था. दादाजी दो मिनिट ताले को यों गुस्से से देखते रहे, जैसे वह कोई शरारती बच्चा हो और बार बार समझाने पर भी बाज न आता हो. ताले पर उनके इस घूरने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. दादाजी ने राजू से पूछा, "इस ताले की चाबी किसके पास है?"

"आप क्या करेंगे चाबी का?" राजू ने पूछा.

"तुमसे जो पूछा जाए, उसी का जवाब दिया करो," दादाजी ने उसे डपटा.

"मुझे नहीं पता," राजू लापरवाही से बोला.

दादाजी उदास हो गए. तभी पिंकी बोली, "दादाजी, चाबी चौकीदार के पास है. कहिए तो उसे बुला कर लाऊं?"

"बिल्कुल, यही तो मैं चाहता हूं," दादाजी का उदास चेहरा खिल उठा.

चौकीदार का घर स्कूल के पास ही था. पिंकी

• अवतारसिंह

kissekahani.com

पांच मिनिट में ही उसे बुला लाई.

"क्या बात है, लालाजी?" चौकीदार ने आ कर पूछा.

"भई, यह स्कूल तो खुला रखो. ताकि जो बच्चे आना चाहें, वे आ तो सकें," दादाजी ने स्वर को भरसक मुलायम बना कर कहा.

"जी हां, और बच्चे स्कूल आकर सारा फर्नीचर, शीशे वगैरा तोड़ दें!" चौकीदार ने दादाजी की खिल्ली उड़ाई.

"कैसे तोड़ देंगे? तुम ताला खोलो, मैं बच्चों की देखभाल करूंगा," दादाजी विश्वास से बोले.

"पर आप हैं कौन?" चौकीदार ने बेरुखी से पूछा.

दादाजी को उसका यह बर्ताव तीर की तरह चुभ गया. उनका दिल किया कि इस चौकीदार को एक जोर की पटकनी दें. टके का आदमी, पर रौब कितना!

हाथापाई करने से उनकी मर्यादा जाती थी. वह कुछ कहने ही वाले थे कि उधर उस इलाके के कौंसलर आ निकले. वे स्कूलों की हालत देखने को दौरा कर रहे थे. उन्होंने कार रुकवाई और इधर आ गए. उन्होंने समझा कि दादाजी कोई अध्यापक हैं. वह दादाजी

से बोले, "क्यों जी, आप बच्चों को स्कूल में जाने से क्यों रोक रहे हैं?"

"जनाब, मैं तो बच्चों को पढ़ाना चाहता हूं. यह चौकीदार स्कूल का ताला ही नहीं खोल रहा है," दादाजी बोले.

कौंसलर साहब ने चौकीदार को झाड़ा और ताला खोलने का आदेश देकर चले गए.

ताला खुला. दादाजी बीस-पच्चीस बच्चों को साथ लेकर यों शान से स्कूल में घुसे, जैसे हाजी पीर का दर्रा जीत कर भारतीय सैनिक आगे बढ़े थे.

सामने ही घंटी लगी हुई थी. दादाजी मुन्नू से बोले, "मुन्नू, जाओ, घंटी बजा दो."

"दादाजी, फिर तो सारे बच्चे आ जाएंगे!"

"तो मैं क्या घंटी अपने सुनने के लिए बजवा रहा हूं?" दादाजी ने उसे घुड़क दिया.

घंटी बजी. सचमुच ही कुछ देर बाद स्कूल में बच्चे आने शुरू हो गए. कइयों के चेहरों पर यों झाड़ बरस रही थी जैसे मम्मी ने उन्हें जबरदस्ती स्कूल भेज दिया हो. कुछ तो बिना बस्ते के कुतूहलवश इधर आ गए थे. कुछ सुबह खेलने के लिए घर से निकले थे, घंटी सुन कर स्कूल में आ गए.

कुछ ही देर में इतनी भीड़ इकट्ठी हो गई कि एक बार तो दादाजी घबरा गए. पर शीघ्र ही उन्होंने स्थिति का सामना करने के लिए कमर कस ली. फुर्ती से उछल कर वह मैदान में बने मंच पर चढ़ गए और जोर से बोले, "सारे बच्चे प्रार्थना के लिए लाइनों में खड़े हो जाओ, अपनी अपनी जमात के अनुसार."

भीड़ चारों तरफ चुपचाप बिखर गई. बच्चे लाइनों में खड़े हो गए. प्रार्थना शुरू हुई.

प्रार्थना के बाद दादाजी ने एक छोटा-सा भाषण दिया : "बच्चो, तुम सब जानते हो कि अध्यापकों ने हड़ताल कर दी है. हड़ताल क्यों हुई? कब खत्म होगी? हमें यह सब सोच कर अपना समय नष्ट नहीं करना है. अध्यापक नहीं है, तो क्या हुआ! स्कूल बिल्कुल उसी तरह चलेगा, जैसे रोज चला करता है. आठवीं जमात के लड़के आज छोटी जमातों को पढ़ाएंगे. मैं यह बता देना जरूरी समझता हूं कि विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई इतनी जरूरी नहीं, जितना अनुशासन जरूरी है."

एक तरफ से शोर उठा : "तो हमें पढ़ाया क्यों जाता है?"

दादाजी बात बदल कर बोले, "पढ़ाई और अनुशासन दोनों ही विद्यार्थियों के लिए यों होते हैं जैसे शरीर के लिए हवा और पानी. किसी एक के बिना काम नहीं चल सकता. आप जानते हैं कि जो स्वयं विद्यार्थी है, उसके लिए ठीक तरह पढ़ा पाना संभव नहीं. इसलिए छोटी जमात के बच्चों को चाहिए कि उन्हें जैसा भी पढ़ाया जाए, वे उसी में संतोष कर लें. कुछ न करने से कुछ करना अच्छा होता है. अब आठवीं जमात के विद्यार्थियों को छोड़ कर बाकी सब बच्चे शांति से अपने अपने कमरों में चले जाएं."

बच्चे लाइनों में चलते हुए अपनी क्लासों में पहुंच गए. थोड़ा बहुत शोर हो रहा था, पर दादाजी को इसमें कोई एतराज नहीं था. आखिर बच्चे जीभ में ताले तो लगा नहीं सकते.

आठवीं क्लास के पंद्रह-सोलह बच्चे आए थे. दादाजी ने उन्हें एक एक क्लास में भेज दिया और समझा दिया कि यदि किसी प्रकार की कोई कठिनाई आ पड़े, तो हेड मास्टर के कमरे में आ कर मुझसे मिल लेना.

दादाजी खुद हेड मास्टर के कमरे में आ गए. बड़ी आरामदायक गोल कुर्सी थी. सामने मेज पर टेलीफोन, चपरासी बुलाने की घंटी, पिन-पैड, कैलेंडर और जाने क्या क्या पड़ा हुआ था. दादाजी को हेड-मास्टर की नादानी पर तरस आया, जो इतनी सुख-सुविधाओं के बावजूद हड़ताल करके घर जा बैठे थे.

स्कूल में दस मिनिट तो शोर हलका रहा. फिर बढ़ने लगा जैसे रेडियो का 'वोल्यूम' बढ़ रहा हो. कुछ देर बाद इस कदर शोर होने लगा जैसे प्रलय आने वाली हो. लग रहा था, बच्चे स्कूल नहीं, किसी मेले में आए हैं. दादाजी झल्ला कर उठे और अपने कमरे से बाहर निकल आए.

फिर वह सामने वाली कक्षा में [illegible] कोई पढ़ाने वाला नहीं था. दादाजी को देख कर बच्चों को जैसे सांप सूंघ गया. चारों तरफ शांति छा गई. दादाजी ने कड़क कर पूछा. "तुम्हारा अध्यापक कहां है?"

"हड़ताल पर," एक बोला.

"हड़ताल वाला अध्यापक नहीं, मैं आठवीं जमात वाले अध्यापक लड़के को पूछ रहा हूं?"

"सर, वह थोड़ी देर के लिए बाहर गया है," एक लड़की ने खड़े हो कर कहा.

"कहां? क्या करने?" दादाजी ने एक साथ दो प्रश्न दागे.

लड़की बगलें झांकने लगी. तभी अध्यापक लड़का कमरे में आ गया. उसने यह सुना और बोला, "सर, मैं चाक लेने बाजार गया था."

दादाजी ने उसके मुंह पर लगी चाट की चटनी देख ली थी. बोले. "देखें, चाक कहां है?"

"जी, वह दूकान अभी खुली नहीं है!"

"हां, इतने सवेरे तो चाट वाले ही बैठते हैं. खैर, तुम मेरे कमरे से चाक ले आओ और पढ़ाना शुरू करो," दादाजी ने मुस्करा कर कहा. वह लड़का झेंप कर चाक लाने चला गया.

फिर वह एक दूसरे
लड़का कुर्सी पर बैठा हुआ
कहा, "क्लास, स्टैंड!"

सब बच्चे खड़े हो

"बैठो बैठो," दादाजी
से वह ऐसे खिले कि कई
आया कि वह यहां आए
उन्होंने अध्यापक लड़के
बहुत शोर कर रही थी.

"सर, ये कहते हैं कि
हो जाए. ये बोलते हैं कि अ
है," उसने इस अंदाज से
ई कुश्ती करने का अ

"हरेक काम करने क
[illegible] बातें

"सर, इनमें से आधे
आए," लड़के ने अपनी

"कोई बात नहीं, आप
"अच्छा, सर, पर इ

"कुछ भी पढ़ाओ,
जिक ज्ञान, विज्ञान, हिंदी
नाम बोल कर दादाजी
साथ वाले कमरे में आ

उस कक्षा में पहले
बड़े प्रभावित हुए; बोले
हम इसके बच्चों को बाद

फिर उन्होंने अध्याप
"क्या पढ़ा रहे हो, मास्ट

"जी. . .जी मैं इन्हें
था," कहते हुए वह हड़
झोली में पड़े मूंगफली के

"ये क्या है?" दादा

"मूंगफली के छिलके
दादाजी ने देखा कि

लेखक परिचय

जन्म—१५ मई १९४८.

शिक्षा—'६४ में हायर सैकण्डरी की और नेशनल स्कालरशिप पाया. अब इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी में मकैनिकल इंजीनियरिंग कर रहे हैं.

पहले कविताएं लिखते थे. वे छपी नहीं, तो कहानियां लिखने लगे. पहली कहानी सन् '६१ में छपी—'राजा भैया' में. अब तक सौ से ऊपर कहानियां छप चुकी हैं. अन्य शौक हैं—फोटोग्राफी, चित्रकारी, घूमना, डाकटिकट संग्रह और पत्र-मित्रता.

पता है—९।६७०३, देवनगर, नई दिल्ली–५.

फिर वह एक दूसरे कमरे में घुसे. वहां अध्यापक लड़का कुर्सी पर बैठा हुआ था. दादाजी को देख कर उसने कहा, "क्लास, स्टैंड!"

सब बच्चे खड़े हो गए.

"बैठो बैठो," दादाजी प्रसन्न हो कर बोले. इस स्वागत से वह ऐसे खिले कि कई मिनिट तो उन्हें याद ही नहीं आया कि वह यहां आए किस लिए थे! याद आने पर उन्होंने अध्यापक लड़के से कहा, "यह आपकी क्लास बहुत शोर कर रही थी."

"सर, ये कहते हैं कि यहां एक पार्लियामेंट की बैठक हो जाए. ये बोलते हैं कि आप मुहल्ले में पार्लियामेंट चलाते हैं," उसने इस अंदाज से कहा जैसे दादाजी ने मुहल्ले में कोई कुश्ती करने का अखाड़ा खोल रखा हो.

"हरेक काम करने का समय होता है. स्कूल में पढ़ाई करनी चाहिए, फालतू बातें नहीं," दादाजी बोले.

"सर, इनमें से आधे लड़के तो बस्ते ले कर ही नहीं आए," लड़के ने अपनी कठिनाई बताई.

"कोई बात नहीं, आपस में सहयोग से काम चला लो."

"अच्छा, सर, पर इन्हें पढ़ाऊं कौन-सा विषय?"

"कुछ भी पढ़ाओ, दर्जनों विषय हैं—गणित, सामाजिक ज्ञान, विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी. . ." एक सांस में सारे नाम बोल कर दादाजी बाहर निकल आए. फिर वह साथ वाले कमरे में आ गए.

उस कक्षा में पहले ही शांति छाई हुई थी. दादाजी बड़े प्रभावित हुए; बोले, "यह जमात सबसे अच्छी है. हम इसके बच्चों को बाद में कोई पुरस्कार देंगे."

फिर उन्होंने अध्यापक लड़के की ओर मुड़ कर पूछा. "क्या पढ़ा रहे हो, मास्टर साहब?"

"जी. . .जी मैं इन्हें अनुपात के सवाल करवा रहा था," कहते हुए वह हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ. उसकी झोली में पड़े मूंगफली के छिलके फर्श पर बिखर गए.

"ये क्या है?" दादाजी ने चकित होकर पूछा.

"मूंगफली के छिलके!" क्लास में से कोई बोला.

दादाजी ने देखा कि क्लास में जगह जगह मूंगफली के छिलके बिखरे पड़े थे. वे दुखी होकर बोले, "ये तुम सब लोग क्या मूंगफलियां खाते रहे हो?"

अध्यापक लड़के ने शरमाते हुए कहा, "सर, ये सब बहुत शोर कर रहे थे. मैंने सोचा, सबसे पैसे इकट्ठे करके मूंगफलियां मंगाई जाएं. फिर ये शोर नहीं करेंगे. आपने ही तो कहा था कि अनुशासन पढ़ाई से अधिक जरूरी है!'

"पर क्लास में मूंगफलियां खाना कहां का अनुशासन है? खैर, अब पढ़ाई शुरू कराओ," दादाजी बोले. उन्हें इस बात से इतना रंज हुआ कि उन्होंने अपना बाकी दौरा रद्द कर दिया और चुपचाप अपने कमरे में वापस जा बैठे.

शोर पहले ही की तरह होता रहा, पर दादाजी अपनी सीट पर जमे रहे. इस समय उन्हें कानों में ठूंसने के लिए रूई चाहिए थी, पर कमरे में कहीं रूई नहीं दीख रही थी. अचानक दादाजी के दिल में खयाल आया कि बच्चों से इस तरह हार मान लेना तो बहुत बड़ी मूर्खता होगी. उनके हौसले बढ़ जाएंगे. हड़ताल तो खुलनी ही है—आज नहीं तो कल. कहीं बाद में अध्यापक यह उलाहना दें कि दादाजी ने दो दिन में ही बच्चे बिगाड़ दिए, तो बड़ी जगहंसाई होगी!

दादाजी बड़े निश्चय से उठ और एक क्लास में जा घुसे. वहां अध्यापक लड़का बोर्ड पर एक सवाल निकाल रहा था. दादाजी प्रसन्न हुए कि शोर के साथ ही सही, पढ़ाई चल तो रही है.

"सर, यह सवाल गलत तरीके से निकाल रहा है,' बच्चों ने हल्ला मचाया.

"मैं देखता हूं," दादाजी ने अध्यापक के हाथ से किताब ली. चक्रवृद्धि ब्याज के प्रश्न को लेकर झगड़ा चल रहा था.

"मेरे जमाने में महाजन चक्रवृद्धि ब्याज नहीं लेते थे, हमने तो साधारण ब्याज के सवाल ही हल किए हैं!" दादाजी ने किताब बंद करते हुए अपनी कठिनाई बताई. फिर बोले, "कोई विद्यार्थी है जो बोर्ड पर यह प्रश्न सही तरीके से हल कर सके?"

(शेष पृष्ठ २७ पर)

kissekahani.com

अरे यार, तुम
यह उम्मीद नहीं
खैर! लो एक रु

अरे बाप रे! ह
बचाओ! बचाओ!
हाथ

भाइयो, यहां दूर
दूर तक कोई भी
नहीं है. पेड़ में तु
बुरी तरह फंसे हो
मैं तुम्हें जरूर
बचाने में मदद दूं
पर इस के लिए तु
कुल दो रुपये दे
लेंगे! बोलो मंजूर

अरे यार, तुम से यह उम्मीद नहीं थी. खैर! लो एक रुपया!
सहसा बड़े जोर की हवा आई...
अरे बचाओ, मेरे पैर उखड़ रहे हैं!
!
अरे बाप रे! हम तो उड़ने लगे!
बचाओ! बचाओ!
शुक्र है! छतरी मेरे हाथ में न थी!
उड़ते उड़ते छोटू-लंबू एक पेड़ में ऐसा अटके कि जान पर बन गई!
हाय! मर गए!
भाइयो, यहां दूर दूर तक कोई भी नहीं है. पेड़ में तुम बुरी तरह फंसे हो. मैं तुम्हें जरूर बचाने में मदद दूंगा, पर इस के लिए तुम्हें कुल दो रुपये देने होंगे! बोलो मंजूर?
मंजूर है, भाई, जल्दी करो!
और फिर...
हाय! छतरी गई, टांग टूटी, पैसा गया! सत्यानाश हो इस बारिश का!
सोहाब

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

सीमा अग्रवाल, इलाहाबाद :

वस्तुएं प्राय: पृथ्वी की ओर आकर्षित होती हैं. लेकिन धुआं आसमान की ओर ही क्यों आकर्षित होता है?

धरती पर ठहरने के लिए तन-मन में वजन की जरूरत होती है!

सुनीताकुमारी निगम, खंडवा :

क्रोध को पी जाना अच्छा है या थूक देना?

जहां थूकना मना हो, वहां पी जाना ही अच्छा है!

उर्मिला मालवीय, खलघाट :

गधे और खच्चर में क्या अंतर होता है?

क्यों?—स्कूल की किताबें तो तुम खुद भी ढो सकती हो!

हेमंतकुमार गुप्ता, उज्जैन :

शक्कर से भी मीठा और जहर से भी कड़ुवा क्या हो सकता है?

बोल!

रमेश काबरा, कलकत्ता–४५ :

वर्तमान युग की सबसे सस्ती वस्तु क्या है?

मंहगाई, जो बिन मांगे मिलती है!

किरणकुमार राय, होशंगाबाद :

क्या आप गागर में सागर डाल सकते हैं?

सवाल के गागर में जवाब का सागर—जरूर जरूर!

सुधारानी मिश्र, नई दिल्ली :

यदि किसी संख्या को शून्य से गुणा किया जाए, तो उसका उत्तर शून्य ही क्यों आता है?

संख्या तो संख्या, उत्तर-पुस्तिका के शून्य से भेंट होने पर विद्यार्थी का भी यही हाल होता है!

विजयकुमार वर्मा, बजलपुरा :

मेरा नाम विजय है, फिर भी मेरी विजय नहीं होती, क्यों?

दूसरों का उपकार करने से फुरसत मिले, तब न!

मुकुंदमाधव मेहरोत्रा, बक्सरिया :

यदि तुलसीदासजी आधुनिक युग में होते, तो रामायण लिखना अधिक पसंद करते, या पराग के लिए 'शिशु गीत'?

राम के ज्येष्ठ पुत्र का नाम अंगरेजी में रखने के लिए हिंदी संसार से उनका बायकाट हो चुका होता!

अतुलमोहन प्रसाद, बक्सर :

सूरज दिन में ही क्यों निकलता है, जबकि उसे रात में निकलना चाहिए?

अवश्य, मिठाई का स्वाद भी खट्टा होना चाहिए!

सतीशकुमार छाबड़ा, सिगमा:

यदि मैं आपको आपकी गंजी खोपड़ी पर बाल उगाने की तरकीब बता दूं, तो?

उनकी फसल कटवाने के लिए हम तुम्हारे नियमित ग्राहक हो जाएंगे!

पंकजकुमार, पूसा :

क्या कारण है कि आप ज्यादातर नदहों, खटमलों, मच्छरों, मूर्खों तथा नेताओं से संबंधित प्रश्न पूछने वाले मूर्खों को ही पुरस्कार देते हैं?

अच्छा तो लो, इस बार तुम्हें भी नहीं देते!

हरिदयाल कोहली, चंडीगढ़ :

वह कौनसा शत्रु है, जो मित्र-सा जान पड़ता है?

अगर तुम मित्रों को आधे नाम से पुकारते हो, और किसी मित्र का नाम शत्रुघ्न हो!

एन. कुमार जैन, झुमरी तिलैया :

किसी को फांसी पर चढ़ाने से पहले उसकी अंतिम इच्छा क्यों पूछी जाती है?

अगर 'पहली' इच्छा पूछी जाए, तो वह यही होगी कि उसे टिकटिकी पर ले आया ही न जाए!

ब्रजेंद्रमोहन गुप्त, नौगांव :

नेपोलियन कहता था कि 'असंभव' शब्द मूर्खों के शब्द कोश में होता है. क्या आपके शब्द कोष में असंभव शब्द है?

हमारे शब्द कोश के सभी संभव शब्द हैं!

बच्चों के अटपटे प्रश्नों
स्तंभ में छापते हैं. जिन
होंगे, उन्हें सुंदर से पुर
स्कार मिले हैं उनके ना
लगा है. प्रश्न कार्ड पर
तीन से ज्यादा मत भेजो
उत्तर नहीं दिए जाएंगे
संपादक, 'पराग (अट
नं. २१३, टाइम्स आफ

रवींद्र श्रीवास्तव , लखन

अगर किसी मास क
किसको मिलेगा?

'कोई' को नहीं मिलेग

सैयद खुर्शीद अली 'अधी

प्रेम से बढ़ कर क्या

इस चक्कर से दूर रहन

विनोदकुमार, जोधपुर :

मर्द को गुस्सा आ
देता है—जब स्त्री को

माताएं सुपुत्र की पीठ

राजेंद्रकुमार भारतीय,

आप 'पराग' के लि
कहां से लाते हैं?

कुछ मधुमक्खियां औ

रमश शिवहरे, नागपुर

भंडारा का गेहूं
मगर अमरीका का गेहूं
क्यों?

क्योंकि नागपुर वाले
४८० की तरह का कोई स

अक्षयकिशोर श्रीवास्तव

सर्वश्रेष्ठ वक्ता कैसे

सर्वश्रेष्ठ श्रोता बन क

नीलम शर्मा, पंजिम :

क्या आपकी बढ़ती
हुए ज्ञान का प्रतीक है?

ऐसा होता, तो वह अ

बच्चों के अटपटे प्रश्नों के चटपटे उत्तर हम इस स्तंभ में छापते हैं. जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर से पुरस्कार मिलेंगे. जिन्हें पुरस्कार मिले हैं उनके नाम के पहले ★ का निशान लगा है. प्रश्न कार्ड पर ही भेजो और एक बार में तीन से ज्यादा मत भेजो. इस स्तंभ में पहेलियों के उत्तर नहीं दिए जाएंगे. पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे),' पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

रवींद्र श्रीवास्तव , लखनऊ :

अगर किसी मास कोई प्रश्न न पूछे, तो इनाम किसको मिलेगा?

'कोई' को नहीं मिलेगा, किसी और को मिलेगा!

सैयद खुर्शीद अली 'अधीर', कोंटा (बस्तर) :

प्रेम से बढ़ कर क्या है?

इस चक्कर से दूर रहना!

विनोदकुमार, जोधपुर :

मर्द को गुस्सा आता है, तो मूंछों पर ताव देता है—जब स्त्री को आता है, तो?

माताएं सुपुत्र की पीठ पर ताव देती हैं!

राजेंद्रकुमार भारतीय, इन्दौर :

आप 'पराग' के लिए इतना सारा 'पराग' कहां से लाते हैं?

कुछ मधुमक्खियां और मधुमक्खे जुटाते हैं!

रमेश शिवहरे, नागपुर :

भंडारा का गेहूं नागपुर नहीं आ सकता, मगर अमरीका का गेहूं भारत आ सकता है—क्यों?

क्योंकि नागपुर वाले भंडारा वालों से पी. एल. ४८० की तरह का कोई समझौता नहीं करते!

अक्षयकिशोर श्रीवास्तव, विदिशा :

सर्वश्रेष्ठ वक्ता कैसे बन सकते हैं?

सर्वश्रेष्ठ श्रोता बन कर!

नीलम शर्मा, पंजिम :

क्या आपकी बढ़ती हुई दाढ़ी आपके बढ़ते हुए ज्ञान का प्रतीक है?

ऐसा होता, तो वह अब तक नुच गई होती!

सुरेन्द्रपाल सिंह, भोपाल :

श्री अवतार सिंह की कहानी वाले 'दादा' में और आप में क्या अंतर है?

वह जब चाहें तब अपनी दाढ़ी हमारी तरह नहीं उतार सकते!

नगमा खान, बरेली :

यदि सब बच्चे 'पराग' को बच्चों का मधुर साप्ताहिक बनाने के लिए आपके कार्यालय के सामने भूख हड़ताल कर दें, तो आप क्या करेंगे?

रसगुल्लों का डिब्बा ले कर हम भी भूख हड़ताल में शामिल हो जाएंगे !

करनजीत सिंह सरन, जुन्नारदेव:

यदि एक ओर मिठाई से भरा थाल हो और दूसरी ओर आपकी प्रिय 'दाढ़ी-मूंछें', तो आप उनमें से किसे चुनेंगे?

खाने के लिए मिठाई और लगाने के लिए दाढ़ी-मूंछें!

राजीव आहूजा, रांची :

दादा,एक दिन मैंने अपने छोटे भाई को मारा, तो पिताजी ने कहा कि अपने से छोटों को नहीं मारते. परंतु जब मैंने कहा कि मैं भी तो आप से छोटा हूं, तो उन्होंने मुझे मारा—ऐसा क्यों?

वाह! मारे कोई और जवाब हम दें!

एम. कुमार जैन, झुमरी तिलैया :

गंजा कंघे को देख कर क्या सोचता है?

'बहुत मंहगा है!'

यदि सांप के आगे 'बीन' की बजाय तबला बजाया जाए, तो?

वह तुम्हारी उंगलियां चूम लेगा!

★ कुमारी पूनम, द्वारा श्री बी. पी. श्रीवास्तव, कृषि महाविद्यालय, ढोली, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार) : 5

हम मच्छरों को इतनी आसानी से रक्त-दान क्यों करते हैं?

संगीत-प्रेमी राष्ट्र होने के कारण!

★ रमेश मोटवानी, अनिल भवन, टैगोर मार्ग, गणेश नगर, बैतूलगंज, बैतूल (म. प्र.):

पानी को मथने से मक्खन क्यों नहीं निकलता?

कैसे निकले? सारे साल कुछ पढ़ो-लिखोगे, तभी तो नंबरों का मक्खन निकलेगा! ●

kissekahani.com

साहसिक बाल-उपन्यास

फूल खिल उठे

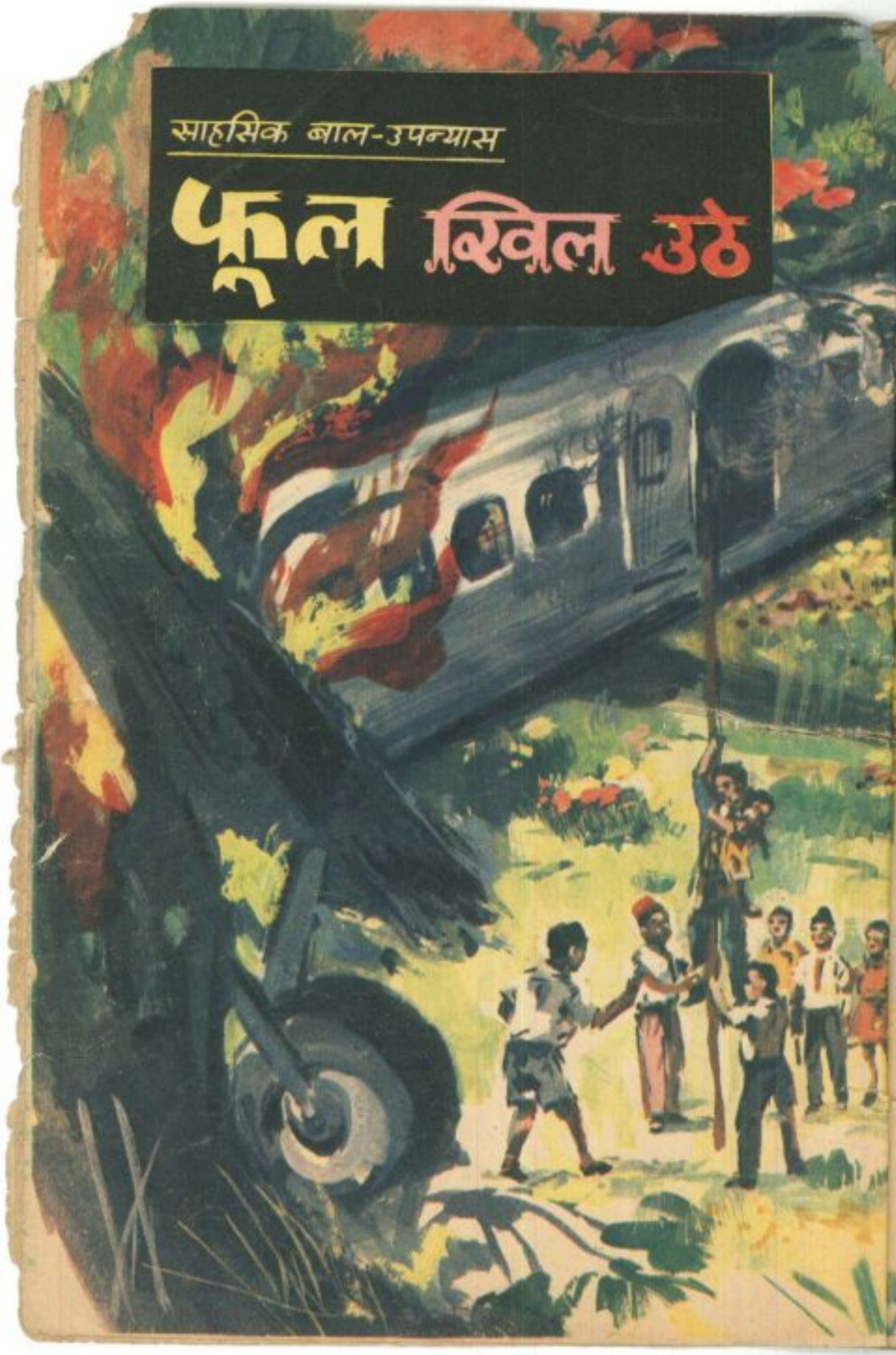

राजू और मंजू
पहाड़ों में
शोर मचाता फि
से नए पहाड़ देख
पहाड़ों की सैर न
होगी."

यह सुनकर

सारे मोहल्ले
तो स्कूल भर के ल

सक्सेनाजी
लगे. लेकिन अभी
करते. एक रोज
उत्साह उभर आय
जहाज जैसा कि उ
की बड़ी से बड़ी
दिखाई देते हैं, अ
भी ऊंचे उड़ते हैं.

एक रोज सु
पर सवार होंगे न,

"नहीं, बेटा,

यह सुन कर
वे उसे पालम हवा
जहाज में सवार
में कहा, "लेकिन

बलवंतसिंह

kissekahani.com

(१)

राजू और मंजू को काठमांडू जाने का बड़ा चाव था. पहले-पहल जब पिताजी ने बताया कि काठमांडू पहाड़ों से घिरा हुआ छोटा-सा खूबसूरत शहर है, तो राजू यह सुन कर उछल पड़ा. वह सारे घर में शोर मचाता फिरा कि मैं पहाड़ों में जा कर अपनी छोटी-सी बंदूक से शिकार खेला करूंगा. हर रोज नए से नए पहाड़ देखूंगा . . .और मंजू की ओर देख कर कहता—"ए मंजू, तू क्यों खुश हो रही है. तू मेरी तरह पहाड़ों की सैर नहीं कर सकेगी. तुझे तो घर में बैठ कर दाल-सब्जी बनाने में माताजी की सहायता करनी होगी."

यह सुनकर मंजू रोने लगी.

सारे मोहल्ले को पता चल गया कि वे लोग काठमांडू जाने वाले हैं. अगर कहीं स्कूल में छुट्टियां न होतीं, तो स्कूल भर के लड़कों को भी इस बात की खबर लग जाती.

सक्सेनाजी को डर था कि देहली जैसे बड़े शहर में रहने वाले इन बच्चों का शायद काठमांडू में मन न लगे. लेकिन अभी तो वे बड़े जोश में थे. हर रोज वे उनसे काठमांडू के बारे में तरह तरह के प्रश्न किया करते. एक रोज जब राजू को पता चला कि वे लोग हवाई जहाज से जाएंगे, तो उसके मन में एक नया उत्साह उभर आया. वह कल्पना ही कल्पना में एक बहुत बड़े हवाई जहाज पर सवार हो जाता—ऐसा ही जहाज जैसा कि उसने कई विज्ञापनों में देखा था. आकाश में उड़ कर कितना आनंद मिलेगा! उसे धरती की बड़ी से बड़ी चीज कीड़े-मकोड़े की तरह दिखाई देगी. यहां तक कि वह बादल जो उसे सिर के ऊपर दिखाई देते हैं, अपने नीचे दिखाई देने लगेंगे, क्योंकि उसके पिताजी ने बताया था कि जहाज बादलों से भी ऊंचे उड़ते हैं.

एक रोज सुबह चाय पीते समय उसने पिताजी से पूछा, "हम लोग पालम अड्डे से हवाई जहाज पर सवार होंगे न, पिताजी?"

"नहीं, बेटा, हम यहां से तो रेलगाड़ी पर सवार होंगे."

यह सुन कर राजू को निराशा हुई, क्योंकि उसने अपने मोहल्ले के कई दोस्तों से कह रखा था कि वे उसे पालम हवाई अड्डे तक विदा करने चलें. राजू ने सोचा था कि जब वे उसे एक शानदार हवाई जहाज में सवार होते देखेंगे, तो अपना कितना रौब जमेगा उन पर. इसलिए उसने भर्राए हुए स्वर में कहा, "लेकिन पिताजी, आपने तो कहा था कि हम हवाई जहाज पर सवार होकर जाएंगे."

"ठीक है. . .लेकिन यहां से हम पटना तक रेल-गाड़ी पर ही जाएंगे. उसके बाद पटना से काठमांडू तक हवाई जहाज से सफर होगा."

इसका मतलब तो यह था कि उसके मित्र उसे हवाई जहाज पर चढ़ते नहीं देख सकेंगे. फिर भी ज्यादा निराशा की बात नहीं थी; देहली से न सही, पटने से ही वह हवाई जहाज का सफर कर सकेंगे.

जब उनके जाने में कुछ ही दिन रह गए, तो फिर राजू और मंजू खाना-पीना भी भूल गए. आखिर वह दिन भी आ पहुंचा जब वह रेलगाड़ी पर सवार हुए. जो दोस्त राजू को विदा करने आए थे, उन्हें उसने बड़े गर्व से अपने प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बिठाया और जब तक गार्ड ने अंतिम सीटी नहीं बजाई, वे लोग वहीं बैठे गप्प हांकते रहे. जब गाड़ी चली, तो राजू के दोस्त और मंजू की सहेलियां नीचे उतर कर हाथ या रूमाल हिलाने लगे. उन दोनों की आंखों में आंसू भर आए. लेकिन थोड़ी ही देर बाद जब गाड़ी यमुना नदी के पुल से गुजरने लगी, तो वे दोनों झांक झांक कर बाहर के दृश्य देखने लगे.

देहली से पटना तक काफी लंबा सफर था. लेकिन राजू और मंजू को बिलकुल थकान नहीं हुई. जब पटना से वे हवाई जहाज पर सवार होने लगे, तो राजू ने देखा कि वे जहाज इतने बड़े और खूबसूरत नहीं थे, जितने कि उसने तस्वीरों में देखे थे.

पटना के हवाई अड्डे पर सक्सेनाजी को पता चला कि दो जहाज काठमांडू जाने वाले थे. प्रबंध कुछ ऐसा करना पड़ा था कि बच्चे एक जहाज में जा रहे थे और बड़े दूसरे जहाज में. सक्सेन.जी को यह बात पसंद तो नहीं आई, लेकिन उन्हें बताया गया कि कुछ मजबूरियों के कारण ऐसा प्रबंध करना पड़ा. पता चला कि और भी कई बच्चे उस जहाज में जा रहे थे.

काठमांडू जाने वाले बच्चों का झुंड भी वहीं दिखाई दे रहा था. राजू को इस बात का पता चला, तो उसके मन को खुशी ही हुई, क्योंकि अलग जहाज में वह जी भर कर बातें कर सकता था. अपने माता-पिता के साथ तो उसे कुछ पाबंदी सहनी पड़ती. उसने वहां बैठे हुए बच्चों से फौरन दोस्ती गांठनी शुरू कर दी.

सबसे पहले वह एक मुसलमान लड़के से मिला, जो उसी की उम्र का था. वह बहुत ही भोला-भाला था. उसके सिर पर गोल बालदार टोपी बहुत सज रही थी. उसने बाकी कपड़े भी बड़े सलीके से पहन रखे थे. वह एक कोने में सबसे अलग बैठा था.

राजू ने आगे बढ़ कर पूछा, "क्या तुम भी काठ-मांडू जा रहे हो?"

मुसलमान लड़के ने अपनी मोटी मोटी आंखें उठा कर उसकी ओर देखा और धीमे स्वर में बोला, "हां."

"मेरा नाम राजू है. तुम्हारा क्या नाम है?"

"लतीफ. . .मेरा नाम लतीफ है."

इतने में मंजू भी वहां आ गई, तो राजू ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "यह मेरी बहन मंजू है."

कुछ देर तक वे इधर-उधर की बातें करते रहे. इतने में राजू को एक सिख लड़का दिखाई दिया, जो रंगदार पगड़ी सिर पर बांधे अपनी नैकर की जेबों में दोनों हाथ डाले बड़े ठाठ से खड़ा था. राजू को उसका ठाठ-बाट बड़ा पसंद आया. उसने सोचा कि इसे भी अपना मित्र बनाना चाहिए.

जब वह मंजू को ले कर उसके पास पहुंचा, तो वह लड़का लतीफ का बिलकुल उलट निकला यानी बड़ा चुलबुला और बातूनी. थोड़ी ही देर में वे आपस में घुलमिल कर बातें करने लगे.

उस सिख लड़के का नाम कृपालसिंह था. उसके साथ उसकी सात साल की बहन भी थी; बिलकुल नन्ही-मुन्नी प्यारी-सी बच्ची. राजू ने पूछा, "अरे, यह बेबी भी हमारे साथ ही हवाई जहाज में बैठेगी?"

कृपालसिंह ने हां में उत्तर दिया, तो राजू मंजू की ओर देख कर बोला, "देखो, यह तुमसे भी छोटी है और अकेली हमारे साथ चलेगी!"

फिर उसने नन्ही बेबी की ओर झुकते हुए पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है, बेबी?"

"बेबी!" नन्ही लड़की के नन्हे नन्हे होंठ हिले.

राजू ने हल्का-सा कहकहा लगाया "अरे, तुम हो भी बेबी और तुम्हारा नाम भी बेबी है!"

इस पर सब हंसने लगे.

राजू ने घूम-फिर कर कुछ और बच्चों से भी मुलाकात की. थोड़ी ही देर बाद उन्हें हवाई जहाज में सवार होने के लिए कहा गया. सब बच्चों का झुंड हवाई जहाज की ओर बढ़ा. अंदर पहुंच कर उन्होंने देखा कि वहां कोई भी बड़ा आदमी नहीं था. सिर्फ हवाई जहाज के अपने कर्मचारी थे.

जब तक हवाई जहाज खड़ा रहा, तब तक बच्चों ने खूब हुल्लड़ मचाया. उन सब बच्चों में राजू और मंजू की सबसे अलग शान थी, क्योंकि मंजू अपना नन्हा-सा ट्रांजिस्टर गले में लटकाए थी. उसमें से साज-संगीत की आवाज निकल कर हर ओर फैल रही थी, जिससे सब बच्चों पर रोब पड़ रहा था. राजू ने भी अपनी खूब-सूरत खुखरी कमर में लटका रखी थी. मंजू और राज को ये दोनों चीजें उनके पिता के एक मित्र ने भेजी थीं.

थोड़ी ही देर बाद सब बच्चों को उनकी सीटों पर बिठा दिया गया और हर एक की कमर में सीट से लगी पेटी कस दी गई.

एकाएक जहाज का इंजन चलने लगा, तो बड़े जोर का शोर उठा. सारा जहाज कांपने लगा और फिर जहाज भारी भरकम चील की तरह पहले धरती पर

दौड़ा और फिर ऊपर
आंखों से बाहर की ओर दे
खा रही थी. यह महसूस
छोड़ कर ऊपर को उठ रहे
की एक लहर-सी दौड़ गई.

जब जहाज आकाश में
पेटियां खोल डालीं. अब

सब बच्चे उचक उचक
लगे. वे उंगली के इशा
चीजें दिखा रहे थे. थोड़ी
कम हुआ, तो फिर वे अपने
गए. अब उन्हें चाय और
प्रबंध हवाई जहाज में ही
थे और चिल्ला चिल्ला क
रहे थे. तभी उन्हें पता च
माता-पिता सवार होने व
वाला था. मंजू ने खुश हो
"ठीक तो है, जब माता-पि
हम पहले से ही वहां बैठे

जहाज काफी देर त
ध्यान ही नहीं रहा. कुछ देर
में से नीचे की ओर दूर
देखते रहे. बहुत ऊंचे पहा
घने जंगल. थोड़ी देर बा
गई. पता चला कि जहाज

थोड़ी देर बाद राजू
वाले कुछ परेशान से हो रहे
जरूर जहाज चलाने वाले
कारण रास्ता भूल गए हैं
को चला जा रहा था! मु
पहाड़ों के कारण वह कहीं

पायलेट और जहाज
रहे थे, क्योंकि जहाज
हो गई थी. वे अपनी जिम्मे
वे कई बच्चों को लिये जा

लेखक परिचय

जन्म : २० मई १९२८

शिक्षा : बी. ए. प्रयाग विश्वविद्यालय.

१९४२ के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया. १९४८ में केंद्रीय सरकार के प्रकाशन विभाग में तीन वर्ष तक सह-संपादक रहे. अब 'उर्दू-साहित्य' (हिंदी) के संपादक हैं.

उपन्यास : रात चोर और चांद, एक मामूली लड़की, काले कोस, निशी उजाला, संजौली निवास, आज की कलियां, औरत और आबशार, रावी पार, हमारी फुलवारी, देवता का जन्म, एक शहर, रांगा की मंजिल आदि.

कहानी संग्रह : मैं रोऊंगी, पंजाब की कहानियां आदि.

पता : ५१७, नेतानगर, नई बस्ती, कीटगंज, इलाहाबाद.

दौड़ा और फिर ऊपर को उठने लगा. राजू तिरछी आंखों से बाहर की ओर देख रहा था. सारी धरती चक्कर खा रही थी. यह महसूस करके कि अब वे धरती को छोड़ कर ऊपर को उठ रहे हैं, राजू के शरीर में सनसनी की एक लहर-सी दौड़ गई.

जब जहाज आकाश में उड़ने लगा, तो उन्होंने अपनी-पेटियां खोल डालीं. अब इनकी जरूरत नहीं रही थी.

सब बच्चे उचक उचक कर खिड़कियों से नीचे देखने लगे. वे उंगली के इशारे से एक दूसरे को नीचे की चीजें दिखा रहे थे. थोड़ी देर में जब उनका जोश कुछ कम हुआ, तो फिर वे अपनी अपनी सीट पर जम कर बैठ गए. अब उन्हें चाय और पेस्ट्री दी गई, क्योंकि इसका प्रबंध हवाई जहाज में ही था. बच्चे चाय पीते जा रहे थे और चिल्ला चिल्ला कर एक दूसरे से बातें भी कर रहे थे. तभी उन्हें पता चला कि जिस जहाज में उनके माता-पिता सवार होने वाले हैं, वह एक घंटे बाद चलने वाला था. मंजू ने खुश होकर ताली बजाते हुए कहा, "ठीक तो है, जब माता-पिताजी काठमांडू में पहुंचेंगे, तो हम पहले से ही वहां बैठे उनका इंतजार कर रहे होंगे."

जहाज काफी देर तक उड़ता रहा. उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहा. कुछ देर तक वह जहाज की खिड़कियों में से नीचे की ओर दूर दूर तक फैले हुए पहाड़ों को देखते रहे. बहुत ऊंचे पहाड़ थे और उन पर फैले घने घने जंगल. थोड़ी देर बाद हर ओर धुंध ही धुंध छा गई. पता चला कि जहाज बादलों में घुसा हुआ है.

थोड़ी देर बाद राजू को यों लगा कि जहाज चलाने वाले कुछ परेशान से हो रहे हैं. उसने अंदाजा लगाया कि जरूर जहाज चलाने वाले पायलेट गहरे बादलों के कारण रास्ता भूल गए हैं. जहाज न जाने कहां से कहां को चला जा रहा था! मुश्किल तो यह थी कि ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के कारण वह कहीं उतर भी तो नहीं सकता था.

पायलेट और जहाज के दूसरे कर्मचारी परेशान हो रहे थे, क्योंकि जहाज की मशीन में भी कुछ गड़बड़ हो गई थी. वे अपनी जिम्मेदारी महसूस करते थे, क्योंकि वे कई बच्चों को लिये जा रहे थे. लेकिन बादलों की धुंध में पायलेट से ऐसी भयंकर भूल हो गई कि वह अपने ठीक रास्ते से भटक कर न जाने कहां निकल आया था. वह बार बार आंखें फाड़ फाड़ कर नीचे की ओर देखता कि शायद कहीं जमीन का सपाट टुकड़ा दिखाई दे, तो वह जहाज को वहीं उतार दे. लेकिन वहां तो ऊंचे ऊंचे भयंकर पहाड़ों के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता था.

आखिर एकदम जहाज की मशीन और खराब हो गई. जहाज डगमगाने लगा. उसके अंदर धुआं भर गया, जिससे बच्चों की सांस रुकने लगी और आंखों से पानी बहने लगा. वे सब खांसने और आंसू पोंछने लगे.

एकाएक जहाज तिरछा हो कर भयंकर शोर मचाता हुआ नीचे की ओर गिरने लगा. देखते ही देखते वह लंबे लंबे पेड़ों में जा घुसा, जिससे शोर और बढ़ गया. पेड़ों की टहनियों को तोड़ता हुआ जहाज आगे ही आगे घुसता जा रहा था और फिर उसके परों के टूटने की आवाज आई और इसके साथ ही जहाज एक पहाड़ से टकरा गया.

पहाड़ से टकराने से पहले जहाज दरख्तों की टहनियों में काफी देर उलझता रहा जिससे उसका जोर कम हो गया वरना जहाज के टुकड़े उड़ जाते.

जहाज के इस तरह अचानक नीचे की ओर गिरने और टकरा जाने से बच्चे हड़बड़ा गए. जिन्होंने उठ कर भागने की कोशिश की वे झटका खा कर जोर से आगे की सीटों से टकराए और फिर जहाज के अंदर धुआं भर जाने से और भी ज्यादा गड़बड़ हो गई.

राजू ने हवाई जहाज की गोल खिड़की में से झांक कर देखा, तो पता चला कि हवाई जहाज जमीन से लगभग बीस फुट ऊंचा लटका हुआ है. इतनी ऊंची जगह से छलांग लगानी भी मुश्किल थी. खास तौर पर छोटे छोटे बच्चों के लिए यह बिल्कुल ही असंभव था. राजू ने हवाई जहाज के अंदर झांक कर देखा कि शायद कोई लंबा रस्सा दिखाई दे. गहरे धुएं के कारण कुछ दिखाई भी

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

एक मजेदार पौराणिक कथा

घोर अपमान

श्रीकृष्ण जब रुक्मिणी से विवाह करने चले, तो बारात के लिए सभी देवी-देवताओं को निमंत्रण भेजे गए. दूर दूर के राजागण भी एकत्रित हुए. देवताओं में से सिर्फ दो ही देवताओं को नहीं बुलाया गया—एक गणपति को, दूसरे शनि को. दोनों ही उम्र में समान थे—छोटे छोटे गोल-मटोल-से, शक्ल-सूरत में बड़े ही बेढंगे. बारात में जाते तो बारात की शोभा बिगड़ जाती. गणेश की नाक हाथी की सूंड की तरह जमीन तक लटकती हुई, छोटी छोटी आंखें, मोटे मोटे होंठ, छाज की तरह फैले फैले बड़े बड़े कान, काला काला रंग और मोटा और भारी भरकम लटकता हुआ-सा पेट, जो देखेगा हंसेगा और ताने मारेगा कि भई बारात में तो यही लड़का देखने काबिल है. उस पर भी चूहे की सवारी, जो धीरे धीरे चले और चूं चूं की बोली बोले.

शनि का रंग भी तबे जैसा ही काला, लाल लाल मोटी मोटी आंखें और खाने के लिए बैठे, तो खिलाने वाले के बारह बजा दे और बारात वालों को शर्म से सिर झुकाना पड़े और देखने वाले दांतों तले अंगुली दबा लें कि भई वाह, इतना खाना तो कोई राक्षस भी नहीं खा सकता! सवारी भी भैंसा, जो बिना सोचे-समझे कहीं गोबर कर बैठे या किसी के कपड़े खराब कर डाले, तो हो जाए बंटाधार!

दोनों बालक रोने लगे, हठ करने लगे बारात में जाने की. पर दोनों की ही माताओं ने दोनों को जैसे-तैसे पुचकार कर मनाया, समझाया, लोभ दिखाया और उन्हें बारात में नहीं जाने दिया. गणेश के पिता शंकर और शनि के पिता सूर्य दोनों ही छिप कर बारात में शामिल हो गए. बारात रवाना होने में अभी कुछ देर थी.

उधर गणेश यानी गणपति को क्रोध आ रहा था—"भई वाह, शरीर तो जैसा विधाता ने दे दिया है, वैसा ही रहेगा, इसमें हमारा क्या दोष. आदमी के गुण को भी तो देखना चाहिए. क्या शरीर हम बदल सकते हैं?"

"सिर्फ हमीं दोनों को ही तो छोड़ा गया है. कार्तिकेय चिढ़ा भी रहा था. . ." शनि बोला.

"अच्छा, तो हम इस अपमान का बदला जरूर लेंगे," गणेश ने कहा.

"किसी तरह इन लोगों की अकल ठिकाने लगाई जाए, तब बात बने," शनि ने अपनी बात पर जोर देकर कहा.

गणेश कुशाग्र-बुद्धि तो था ही, इसलिए उसके दिमाग

kissekahani.com

में देवताओं को छकाने
गई. वह अपने चूहों के
कि जिधर से बारात
एकदम धोबा कर दो.
नीचे पोला करने लगे.
यह सब काम कर दिया

बारात रवाना हुई
कि हाथी, बैल गाड़ियां,
भी जोर पड़ता कि रास्ते
सहित उनकी सवारी गड़
भर भी आगे बढ़ना दूभ

"हाय रे, मेरी तो
से मुंह निकाल कर बूढ़े

"और मेरा तो
कितना प्यारा था!"

"हाय रे, यह कैसा
झोली टटोलते हुए जड़ी

यह देख कर श्रीकृ
कर उनके कान में बोले
कहीं आपके भूत-प्रेतों

"नहीं. . .नहीं, मु
करते—मैं देख कर अ
आगे बढ़ कर उन्होंने
आए, तो मुंह जरा उद
कारस्तानी गणेश की है
हो गया है. उसके चूहे
लगे हुए हैं. कई चूहों

में देवताओं को छकाने की एक तरकीब शीघ्र ही आ गई. वह अपने चूहों के सरदार के पास गया और बोला कि जिधर से बारात जा रही है उस मार्ग को नीचे से एकदम थोथा कर दो. चूहे भागे, रास्तों को नीचे ही नीचे पोला करने लगे. बारात रवाना होने के पूर्व ही यह सब काम कर दिया गया.

बारात रवाना हुई और ज्यों ही बड़े मार्ग पर पहुंची कि हाथी, बैल गाड़ियां, रथ धरती में धंसने लगे. जरा भी जोर पड़ता कि रास्तों की पर्त टूट जाती और देवताओं सहित उनकी सवारी गड्ढों में धंस जाती. बारात का तिल भर भी आगे बढ़ना दूभर हो गया.

"हाय रे, मेरी तो कमर में दर्द हो गया," गड्ढे में से मुंह निकाल कर बूढ़े ब्रह्मा बोले.

"और मेरा तो बाहन खरगोश ही मर गया, हाय कितना प्यारा था!" चंद्रदेवता आंसू छलकाते बोले.

"हाय रे, यह कैसा तूफान!" अश्विनीकुमार अपनी झोली टटोलते हुए जड़ी-बूटी निकाल कर बोले.

यह देख कर श्रीकृष्ण चकित रह गए. शिव को बुला कर उनके कान में बोले—"यह क्या बला है, भूतेश्वर? कहीं आपके भूत-प्रेतों की माया तो नहीं है?"

"नहीं. . .नहीं, मुझ से पूछे बिना वे कुछ भी नहीं करते—मैं देख कर आता हूं," शिव बोले और वहां से आगे बढ़ कर उन्होंने खोज-बीन की और लौट कर वापस आए, तो मुंह जरा उदास-सा था. कहने लगे, "यह सब कारस्तानी गणेश की है, बड़ा जिद्दी लड़का है. वह नाराज हो गया है. उसके चूहे समस्त मार्गों को थोथा करने में लगे हुए हैं. कई चूहों को मैंने देखा है और उनके निशान भी मिले हैं."

"तो अब बारात कैसे पहुंचेगी?" कृष्णजी उदास हो कर बोले, "मुहूर्त टल जाएगा."

"पर करूं भी क्या?" शिव बोले.

"एक थप्पड़ लगाओ जा कर. . ." बलराम ने आगे बढ़ कर कहा.

"ना, बाबा ना, ऐसा करने से तो वह आसमान सिर पर उठा लेगा—और कृष्ण कुंवारे ही रह जाएंगे!" शिव गंभीर होकर बोले.

"तो जो कुछ करना है जल्दी करिए," बलरामजी ने कहा.

दीनदयाल 'कुंदन'

"एक ही उपाय है, छोकरे को मनाना पड़ेगा जाकर. कृष्णजी को खुद चलना पड़ेगा," शिव ने तरकीब बताई.

पहले दूत भेजे गए, पर गणेश नहीं आए. खुद दूल्हे राजा गए, शिव ने भी पुचकार कर बारात में चलने के लिए कहा, पर गणेश नहीं माने. बोले कि मेरी दो शर्तें हैं—पहली यह कि शनि को भी बाराती बनाया जाए और दूसरी यह कि कृष्णजी से पहले मेरा विवाह करो.

मरता क्या न करता. बारात नहीं पहुंच पाएगी, तो लगन टल जाएगी और हारा हुआ शिशुपाल भी शायद कोई बखेड़ा खड़ा कर दे. बीच में ही दोनों शर्तें मान ली गईं. गणपति ने चूहों के सरदार को आदेश दिया कि रास्ते पहले जैसे ही बना दो और कुछ ही पलों में काम निपट गया.

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

← जब मैं बहुत अकेली होती हूं, तो मेरी प्यारी गुड़िया ही मेरा मन बहलाती है!
(फोटो : देवदास कुसुम)

गुड़िया

हम तीन नहीं, चार हैं—
चौथी गुड़िया जो है!
(फोटो : डी. डी. मल्होत्रा)

← मैं काट नहीं रहा हूं! गुड़िया को प्यार करने का यह मेरा अपना तरीका है!

मेरी गुड़िया

↑ लगता है रूठ गई है, देखो तो इसके नखरे! (फोटो : एस. पी. सोनी)

← इन दोनों की शक्लें ठीक मुझ से मिलती-जुलती हैं—सभी मेरी बहनें जैसी लगती हैं न! (फोटो : सोनिया)

व्यंगकथा

धरती के चूहे ..... मंगल

kissekahani.com

न्यूयार्क : १ अप्रैल ६८

'अखिल विश्व चूहा सम्मेलन' में चूहों ने अपने अधिकारों पर कोई चर्चा नहीं की, बल्कि अपने भविष्य के बारे में विचार किया. भारत के चूहों की ओर से टूलामल ने आज पहली बैठक में एक प्रस्ताव रखा. प्रस्ताव में कहा गया : "धरती पर आदमियों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है और संभव है कि अगले बीस-पच्चीस वर्ष बाद हमारी जाति के लोगों को भूखों मरना पड़े. यह भी संभव है कि भूख से मरते मनुष्य हमें व हमारे जैसे दूसरे घरेलू जीव-जंतुओं को ही खाने लग जाएं.

"आदमियों से हमारी जाति को एक और सबसे भारी खतरा होता जा रहा है—वह है इनकी आपसी लड़ाई. धरती पर लड़ाई के आसार तेजी से बढ़ते जा रहे हैं. इनकी लड़ाई में यह हरी-भरी धरती बमों आदि से बिल्कुल चौपट हो जाएगी. तब सब से अधिक नाश, मेरा दावा है कि, हमारी ही जाति का होगा... (तालियां)."

ऐसी ही अनेक बातों पर विचार रखते हुए टूलामल ने एक सुझाव रखा : "अपनी जाति की सुरक्षा के लिए यह अत्यंत जरूरी है कि हम धरती से दूर किसी भी उपग्रह में जा कर बसने पर विचार करें. इससे हम जहां धरती पर होने वाली लड़ाई और विनाश से बचेंगे, वहां हमें दूसरे उपग्रह में खाने-पीने की चीजें भी कुछ दूसरी तरह की मिलेंगी. तब हमारी जीभ का स्वाद बदलेगा. खूब खाएंगे और सारी जाति मजबूत बनेगी."

यह प्रस्ताव थोड़ी बहस के बाद पास हो गया.

पहली बैठक यहीं खत्म कर दी गई क्योंकि सभी चूहों के पेट में बिल्लियां दौड़ने लगी थीं. बैठक खत्म होते ही टूलामल को बधाइयां मिलने लगीं और न्यूयार्क के 'चुहिया क्लब' ने टूलामल को शानदार भोज दिया.

दूसरी बैठक में काफी सोच-विचार के बाद यह निश्चय किया गया कि अपनी जाति को सुरक्षित रखने के लिए हमें मंगल ग्रह में बसने की कोशिश करनी चाहिए; क्योंकि चंद्रलोक पर तो शीघ्र ही अमरीका और रूस पहुंचने वाले हैं.

न्यूयार्क : २ अप्रैल ६८

आज चूहा सम्मेलन का दूसरा दिन था. आज मंगल ग्रह पर पहुंचने के सवाल पर बड़ी गंभीरता से विचार शुरू हुआ. सबसे पहले यह समस्या सामने आई कि धरती से वहां पहुंचा कैसे जाएगा? और दूसरी मंगल ग्रह की सरकार से पहले इस बारे में मित्रतापूर्ण बातचीत कर लेने की समस्या थी.

इन दो समस्याओं पर ही विचार हुआ. कुमारी चुक्खी ने मंगल ग्रह पर पहुंचने के बारे में सलाह दी कि हम अमरीका अथवा रूस की सरकार से राकेट की मदद मांगें. विश्व कल्याण के लिए और मनुष्य जाति अपनी भलाई और सुख के लिए हमें अवश्य मदद देगी.

इंग्लैंड के रेट्सन ने इस सुझाव का समर्थन करते हुए कहा, "इन दोनों सरकारों से बातचीत करने के लिए इन दोनों देशों से आए प्रतिनिधि इस बारे में बातचीत कर लें. यही ठीक रहेगा."

तभी अमरीका के प्रतिनिधि रेटोला ने कहा, "हमारे देशकी सरकार अभी चंद्र लोक पर पहुंचने में पूरी तरह सफल नहीं हुई है, न ही रूस! ऐसी स्थिति में ये दोनों देश हमारी समूची जाति को मंगल ग्रह पर पहुंचा सकेंगे? मुझे शक है." रेटोला की इस बात पर सन्नाटा छा गया.

अधिकांश चूहे कुछ सोचने के बजाय टूलामल और मिस चुक्खी की तरफ देखने लगे.

थोड़ी देर बाद टूलामल ने कहा, "मिस्टर रेटोला की बात सही है. इसके लिए हमें रूस और अमरीका की सरकारों से बातचीत करनी पड़ेगी कि ये सरकारें जिस तरह चंद्रलोक पर रॉकेट के साथ वैज्ञानिक यंत्र

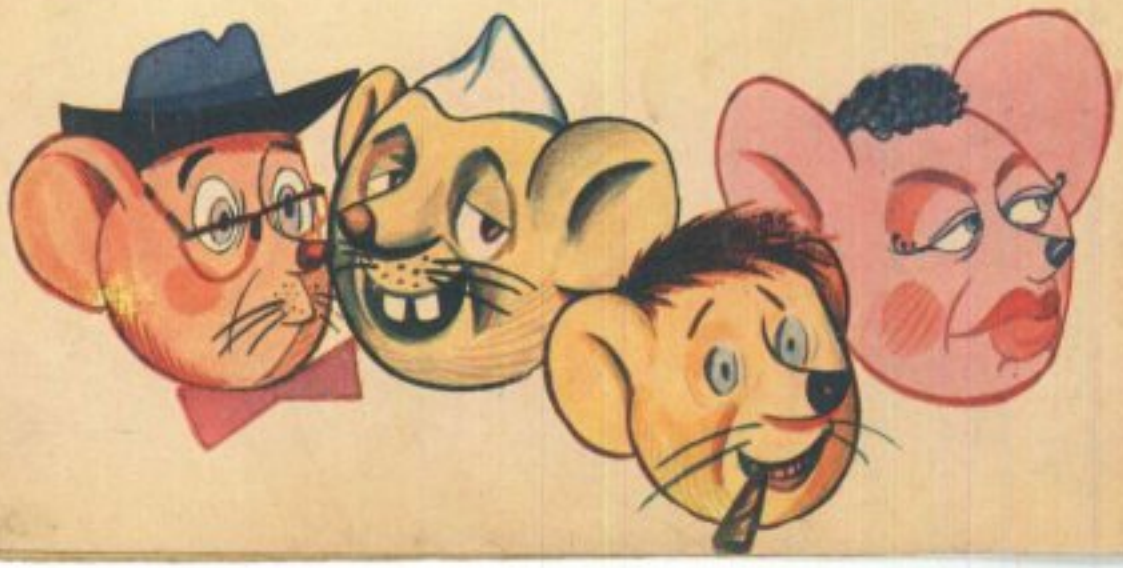

आदि उतार रही हैं, उ
धरती पर उतार दें."

"इसके लिए,"
"हम इन दोनों ही स
रास्ते में हमारी ओर
कोई नुकसान नहीं पहु

"बशर्ते कि हमा
पहले से रख दी जाए
कि यह बात सब से पी
चूहे ने कही. इस बात ने
होती रही.

मिस्टर रेटोला ने
बीच हम मंगल ग्रह
अपन बारे में सारी ज
में आसानी रहे."

इसी बीच नींद
पर केवल एक मंदिर
राज्य ह."

तभी हाल में हज
है? कहां है?"

हमारे संवाददात
वापस गहरी नींद में
चुक्खी को बताना
में एक छोटी-सी जग

kissekahani.com

आदि उतार रही हैं, उसी तरह हम को भी मंगल ग्रह की धरती पर उतार दें."

"इसके लिए," मिस चुक्खी ने बात को बढ़ाया, "हम इन दोनों ही सरकारों को विश्वास दिला देंगे कि रास्ते में हमारी ओर से उनके राकेट व अन्य यंत्रों को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा."

मंगल ग्रह पर

मनोहर वर्मा

"बशर्ते कि हमारे खाने पीने की सामग्री राकेट में पहले से रख दी जाए . . ." हमारे संवाददाता ने बताया कि यह बात सब से पीछे बैठे एक बहुत ही मोटे और सुस्त चूहे ने कही. इस बात से चूहा मंडल में बहुत देर तक चीं-चीं होती रही.

मिस्टर रेटोला ने चीं-चीं खत्म होने पर कहा, "इस बीच हम मंगल ग्रह सरकार से संबंध जोड़ लें और उन्हें अपने बारे में सारी जानकारी दे दें ताकि आपसी समझौते में आसानी रहे."

इसी बीच नींद से जागते हुए घोंघूमल बोले, "धरती पर केवल एक मंदिर ऐसा है जहां हमारा एकच्छत्र राज्य है."

तभी हाल में हजारों आवाजें चिचिया उठीं—"कहां है? कहां है?"

हमारे संवाददाता का कहना है कि तब तक घोंघूमल वापस गहरी नींद में सो चुके थे. अतः इसके आगे मिस चुक्खी को बताना पड़ा कि भारत के राजस्थान प्रांत में एक छोटी-सी जगह है देशनोक. वहीं एक मंदिर है जिसमें चूहों का एकच्छत्र राज्य है.

"मेरा प्रस्ताव है कि इस मंदिर को भी मंगल ग्रह में ले जाया जाए," घोंघूमल ने पुनः जागते हुए कहा. अपनी दुमें हवा में लहराते हुए फुदक फुदक कर चूं-चीं-चूं करते हुए चूहों ने भारी प्रसन्नता दिखाई.

इसके बाद जैसा कि हमें पता चला है, एक कमेटी मंगल ग्रह सरकार से बातचीत करने के लिए तथा दूसरी रूस व अमरीकी सरकारों से राकेट आदि किराए पर लेने के लिए बना दी गई.

इसके अलावा घोंघूमल और मिस चुक्खी मंदिर को मंगल ग्रह में ले जाने के बारे में सारा इंतजाम करने वाली कमेटी के प्रधान बनाए गए.

न्यूयार्क : ३ अप्रैल ६८

कल अखिल विश्व चूहा सम्मेलन समाप्त हो गया. सब चूहे अपने अपने देश लौट गए. केवल उस कमेटी के लोग अभी न्यूयार्क में ठहरे हुए हैं, जो मंगल ग्रह की सरकार से बातचीत का ब्यौरा तैयार कर रही है.

न्यूयार्क : ८ अप्रैल ६८

हमारे संवाददाता को उस कमेटी द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट की एक कॉपी हाथ लगी है, जो मंगल ग्रह सरकार को भेजी जाएगी. हमें खेद है कि इस रिपोर्ट को हम पूरी नहीं छाप सकेंगे, क्योंकि शुरू के कई पृष्ठ गायब हैं. बाकी कागज भी कुतरे हुए तो हैं, पर पढ़े जा सकते हैं. यह अंश जो हम नीचे छाप रहे हैं, इसमें चूहों ने अपने बारे में सारी जानकारी देते हुए मंगल ग्रह की सरकार को लिखा है कि :

"हम चूहे कुतरने वाले जीव हैं. अक्सर जमीन में छेद बना कर रहते हैं. वैसे घरों में, खेतों-खलिहानों, गोदामों-दूकानों, गंदी नालियों आदि सभी जगहों पर रहते हैं. हम जहां भी रहते हैं लकड़ी, ईंट, चूना व दीवार आदि में छेद कर लेते हैं जिसे मनुष्य बिल कहते हैं. इसी

ओहो ! मेरी मनपसंद

स्वादिष्ट दौराला मिठाईयां...

Daurala

दौराला मिठाईयां ...
सब की मनपसंद !

लीजिये :

इम्पीरियल टॉफ़ीज़, फ़्रूट टॉफ़ीज़,
गोल्डन क्रिस्प, मिक्स्ड फ़्रूट बाल्स, दौराला बॉल बॉन,
लॉली पॉप्स, बिम्टो लिकर।

A DCM PRODUCT

मोटापा

बिल में हम अपने
से आठ तक बच्चे

"हम प्रायः
चलते-फिरते हैं औ
बच्चों पर हमला
हम बहुत भूखे हो
रात को ही हमला

"हमारी लंबा
हमारी दुम की लंबा
अधिक होती है. दुम

"लगभग दो इं
है, पूरा मुंह तिकोना

"कान धीमी
हमारी सूंघने की श
डरपोक, चालाक प
वाला कहा जाता है
है. मुंछ के बाल लंबे
होते हैं—आगे के औ
भिन्न होते हैं.

"आगे के दांत
ये लंबे और तीखे हो
का काम लिया जाता

"पिछले दांत
दांत जबड़े की दोनों

बिल में हम अपने बच्चों को पालते हैं. हम चूहों के पांच से आठ तक बच्चे एक समय में होते हैं.

"हम प्रायः समूह बना कर रहते हैं. साथ साथ चलते-फिरते हैं और वक्त आने पर आदमी या सोते हुए बच्चों पर हमला भी कर देते हैं. विशेषकर तब, जब हम बहुत भूखे होते हैं. खाने-पीने की जगहों में प्रायः रात को ही हमला करते हैं.

"हमारी लंबाई सात से दस इंच तक होती है, और हमारी दुम की लंबाई हमारे शरीर की आधी लंबाईसे कुछ अधिक होती है. दुम पर हलके हलके रेशमी बाल होते हैं.

"लगभग दो इंच की गोलाई लिये हमारा सिर होता है, पूरा मुंह तिकोना और मजबूत जबड़े वाला होता है.

"कान धीमी से धीमी आहट को भी सुन लेते हैं. हमारी सूंघने की शक्ति भी बहुत तेज होती है. हमें बड़ा डरपोक, चालाक पर गंदा, प्लेग जैसे भयंकर रोग फलाने वाला कहा जाता है. हमारी आंखें छोटी पर गोल होती हैं. मूंछ के बाल लंबे और कड़े होते हैं. दांत दो तरह के होते हैं—आगे के और पीछे के. बनावट और नाप में दोनों भिन्न होते हैं.

"आगे के दांत चार होते हैं—दो ऊपर दो नीचे. ये लंबे और तीखे होते हैं, इनसे किसी भी चीज को कुतरने का काम लिया जाता है.

"पिछले दांत गिनती में बारह होते हैं. तीन तीन दांत जबड़े की दोनों ओर ऊपर व नीचे. ये दांत काफी मजबूत होते हैं और कुछ खुरदरे होते हैं. ये काटने या कुतरने के लिए नहीं होते. अगले दो दांतों से कुतरी हुई चीज को इन पिछले दांतों से चबा कर, पीस कर हम भोजन पेट में निगलते हैं.

"हमारे पंजे छोटे छोटे पर मजबूत होते हैं जिनका रंग मांस का-सा होता है तथा इन पर हलके हलके बाल होते हैं. एक एक पंजे में पांच पांच उंगलियां होती हैं, जिन पर तीखे, लंबे नाखून होते हैं. इन से हमें सीधी सपाट दीवार पर भी चढ़ने में आसानी रहती है. इन्हीं पंजों से हम हाथ का भी काम लेते हैं.

"हम सभी तरह की चीजें खा लेते हैं. हम आदमी की खेती-बाड़ी, अनाज के गोदाम व घरों में काफी नुकसान कर देते हैं, इसी लिए मनुष्य हमें कभी पसंद नहीं करते.

"अब मनुष्यों की आपस की लड़ने-झगड़ने की आदतों से हम भी उन्हें पसंद नहीं करते हैं और हम मंगल ग्रह की सरकार से प्रार्थना करते हैं कि हमें मंगल ग्रह में एक चूहा नगर बसाने की इजाजत दे."

—विश्व के चूहों की ओर से

मंगल ग्रह सरकार से मिलने वाला जवाब हम प्राप्त करते ही अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर देंगे.

नोट: पराग के पाठक अपने घर व गली-मुहल्ले के चूहों को विश्व चूहा सम्मेलन का निर्णय बता दें ताकि वे मंगल ग्रह पर जाने के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें. ●

तोपदड़ा, अजमेर.

DCM PRODUCT

अभी कुछ दिनों पहले की बात है. मैं आफिस से घर आ कर कपड़े बदल रहा था कि मेरे पड़ोसी का लड़का लल्ला आ कर बोला, "क्या आपने वह नाटक, जो रंग-भवन में चल रहा है, देखा है?" मैंने ज्यों ही उत्तर देने के लिए मुंह खोला कि तब तक उसकी बहन उर्मिला भी आ गई. उसने भी यही सवाल पूछा. मैंने कहा, "अभी पिछले रविवार को ही तो हम लोगों ने देखा है. क्या तुम दिखलाने वाले थे?"

यह सुनते ही दोनों बच्चों ने कुछ गंभीर-से हो कर एक साथ कहा—"आपको वह नाटक कैसा लगा?"

मैंने सहज भाव से कहा, "नाटक तो बेजोड़ है. हास्य रस का ऐसा नाटक मैंने बहुत सालों के बाद देखा है."

कहानी

नाटक

kissekahani.com

मेरा उत्तर सुनते ही उर्मिला प्रसन्नता से खिल उठी. उसने बड़े गर्व के साथ कहा, "मैं भी यही कहती हूं. लेकिन यह मेरा भाई इस बात को मानता ही नहीं. कहता है कि नाटक में हंसने लायक कौनसी बात है? जहां मैं हाल में हंसते हंसते लोट-पोट हो जाती थी, वहां यह मुक्का दिखाते हुए मुझ पर लाल-पीला होता था. लेकिन उस समय तो मुझे ऐसा लगता था कि मैं कई महीनों तक हंसती ही रह जाऊंगी."

मेरी पत्नी ये बातें सुन रही थी. वह मुस्कराई, बोली, "मुझे तो नाटक एकदम कंडम लगा. मैं कहती हूं कि ऐसा खराब नाटक अपनी जिंदगी में मैंने नहीं देखा. उसमें हंसने लायक कुछ भी नहीं है. हां, जो बेबात हंसते हैं, उनकी बात जुदा है. उन्हें वह जरूर पसंद आया होगा."

मैंने मुस्कराते हुए कहा, "नाटक देखते समय तो सभी लोग हंसते थे. आप भी खूब हंस रही थीं. किंतु अब आप कहती हैं कि उसमें हंसने लायक कुछ नहीं था. कितने आश्चर्य की बात है!"

मेरी पत्नी ने हंसते हुए कहा, "जहां पर अधिकांश लोग हंस-बोल रहे हों, वहां पर कोई मनहूस आदमी ही मुंह लटका कर बैठा रह सकता है. मैं समझती हूं कि लोग नाटक देख कर अपने आस-पास के लोगों को हंसते हुए देख कर हंस रहे थे." इतना कह कर वह भीतर रसोई में चली गई.

मेरी और पत्नी की बातें सुन कर वे दोनों भाई-बहन भी वापस चले गए. हम लोग आराम से चाय-नाश्ता करने लगे. सहसा सुनाई पड़ा— "मैं कहता हूं कि वह नाटक खराब नाटकों में भी सबसे खराब नाटक है. मैं एक बार नहीं, सौ बार डंके की चोट कहता हूं कि नाटक सेंत में देखने लायक भी नहीं था!" यह आवाज थी लल्ला की, जो शेर की तरह गरज गरज कर अपनी बहन को समझा रहा था.

लेकिन उर्मिला ने अपनी सुमधुर आवाज में कहा, "भैया, तुम मिस्टर सिंह की बात तो मानोगे या नहीं? वह एक पढ़े-लिखे समझदार व्यक्ति हैं."

लल्ला ने बड़े ही कर्कश स्वर में मुट्ठी तान कर कहा, "मिस्टर सिंह कोई ईश्वर थोड़े ही हैं कि जो कुछ कहेंगे वह सत्य ही होगा. उनकी पत्नी भी तो कह रही थीं कि नाटक खराब था. वह भी तो पढ़ी-लिखी हैं. उनके भी नाटक रेडियो से प्रसारित होते हैं. क्या उनकी बात ठीक नहीं हो सकती? मैं तो कहता हूं कि इस विषय में उनकी पत्नी का निर्णय ज्यादा सही है."

उर्मिला ने हंसते हुए कहा, "मुझे लगता है कि तुम्हारा सिर फिर गया है. हर बात में तुम मुझ से लड़ने के लिए तैयार हो जाते हो. जिस चीज को मैं आम कहती हूं, उसे तुम इमली बताते हो."

लल्ला भला अपने
वह यह सुनकर आपे से
पर दनादन झापड़ औ

उर्मिला सिर पीट
सुन सुन कर मैं भी दौड़
आदमी भी बाहर आ गए.

दोनों ने अपनी अपनी

आए हुए पड़ोसियों
उसे लोग नारद कहते थे.
दिलचस्पी लेता था. उसने
कहा, "तुम बिल्कुल ठीक
यह नाटक देखा है. वह क
पिछले सौ सालों में मैंने

नारद बाबा का यह
"झूठ भी सफाई के साथ
बोला जाता कि रंगे हाथ
भाई साहब अस्सी
सौ साल में ऐसा खराब
कमाल की बात आप कर

उर्मिला का यह उत्त
उन्होंने लल्ला की ओर
"तुम्हारी बहन को तो म

लल्ला भला अपने को सिरफिरा कैसे मान लेता? वह यह सुनकर आपे से बाहर हो गया, बस उर्मिला पर दनादन झापड़ और घूंसे बरसने लगे.

उर्मिला सिर पीट कर रोने-चिल्लाने लगी. शोर-गुल सुन कर मैं भी दौड़ा हुआ गया. बिल्डिंग के दूसरे आदमी भी बाहर आ गए.

दोनों ने अपनी अपनी राम कहानी सुनाई.

आए हुए पड़ोसियों में एक बूढ़ा आदमी भी था. उसे लोग नारद कहते थे. दूसरों के लड़ाई-झगड़े में वह बड़ी दिलचस्पी लेता था. उसने लल्ला की चापलूसी करते हुए कहा, "तुम बिल्कुल ठीक कहते हो. मेरे बड़े भाई ने भी यह नाटक देखा है. वह कह रहे थे कि ऐसा बोगस नाटक पिछले सौ सालों में मैंने नहीं देखा."

नारद बाबा का यह उत्तर सुन कर उर्मिला ने कहा, "झूठ भी सफाई के साथ बोला जाता है. ऐसा झूठ नहीं बोला जाता कि रंगे हाथों ही पकड़े जाना पड़े. आपके भाई साहब अस्सी साल के होंगे और फरमाते हैं कि उन्होंने सौ साल में ऐसा खराब नाटक नहीं देखा. वाह! क्या कमाल की बात आप करते हैं!"

उर्मिला का यह उत्तर सुन कर नारद दंग रह गए. उन्होंने लल्ला की ओर देखते हुए झुंझला कर कहा, "तुम्हारी बहन को तो मैं बहुत शरीफ समझता था. पर

हरिश्चंद्र सिंह

उसे तो बात करने की भी तमीज नहीं है. देखो, कैसी बाल की खाल निकाल रही है. इसको पढ़ाना-लिखाना सब बेकार गया."

नारद की बातें सुन कर एक पड़ोसी महिला ने बीच में टोका, "आपने खुद नाटक न तो पढ़ा है और न देखा है. दूसरों की बातें सुन कर इस गरीब लड़की पर क्यों गुस्सा उतार रहे हैं. मैंने नाटक देखा है. मुझे बहुत अच्छा लगा. थियेटर में और बाहर भी मैंने सब को एक स्वर से उसका बखान करते हुए पाया. आपको ही मैं केवल खराब नाटक कहते हुए सुन रही हूं."

नारद ने अपना पलड़ा हल्का होते हुए देख कर मुंह बिचकाते हुए लल्ला से कहा, "चलो, आज रात को नौ बजे हम लोग एक साथ बैठ कर नाटक देखेंगे. नाटक देखने के बाद तो मैं अधिकार पूर्वक अपना निर्णय दे सकता हूं."

यह सुन कर उस पड़ोसिन महिला ने कहा, "आप तो निरक्षर भट्टाचार्य हैं. आपको कथानक, संगीत, नृत्य और कथोपकथन के बारे में क्या मालूम है? आप की बुद्धि तो हाल में जाते ही चकरा जाएगी. सुनो, मेरी छोटी बहन सविता आई हुई है. वह एक अच्छी लेखिका और

पत्रकार है. उसे साहित्य, कला और संगीत का अच्छा ज्ञान है. और मेरी मां, वह हिंदी भाषा की एक जानी-मानी विदुषी हैं. हम सब लोग चलेंगे. आप भी चलें. सब लोग साथ में नाटक देखेंगे. फिर हम सब लोग आपस में विचार-विमर्श कर निर्णय देंगे. उसे ये लोग मान लेंगे. क्यों, लल्लाजी, ठीक है न?"

लल्ला ने नारद की ओर देख कर कहा, "मुझे आप लोगों का सुझाव मंजूर है."

नारद ने भी सुझाव पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाते हुए कहा, "हां, इस तरह हम सब लोग मिल कर नाटक के संबंध में जरूर ठीक ठीक निर्णय कर लेंगे. लल्ला, तुम जा कर हम सब लोगों के लिए टिकट निकाल लाओ. हम सब लोग खा-पी कर अभी आ जाते हैं. बस, टैक्सी में बैठकर चले जाओ."

लल्ला ने कहा, "बाबा, आपकी आज्ञा सिर आंखों पर. मैं खाना खा कर अभी टिकट निकाल लाता हूं. दो घंटे का समय है. सब हो जाएगा."

वह महिला और नारद खाना खाने अपने अपने घर चले गए. अपनी मनचाही बात पूरी होते देख वे बड़े प्रसन्न थे.

उर्मिला और लल्ला भी खाना खाने बैठ गए. खाते खाते उर्मिला ने कहा, "भैया, मां और पिताजी घर पर नहीं हैं. उनकी आज्ञा के बिना नाटक देखने जाना ठीक नहीं; पिताजी बहुत बिगड़ेंगे."

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० जुलाई तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, 'पराग' में उन सब बच्चों के नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे. अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदि के कार्डों पर नहीं. अपनी उम्र भी अवश्य लिखो. पता यह लिखो—

संपादक, 'पराग (हमारी पसंद— १९)', पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

लल्ला ने कहा, "मैं उनसे हाथ जोड़ कर माफी मांग लूंगा."

"पर पैसे कहां से आएंगे?"

"गुल्लक में से निकाल लेंगे," लल्ला ने सुझाव दिया.

उर्मिला ने कहा, "हम लोगों ने वे पैसे कितना जतन करके दो साल में इकट्ठे किए हैं. छह टिकट निकालने में बारह रुपये लग जाएंगे. दो टैक्सी भी करनी पड़ेंगी. आते-जाते पांच रुपये की चपत यह भी लगेगी. वहां चाय-पानी में भी कुछ न कुछ जरूर खर्च होगा. इस तरह हमारे गाढ़ी मेहनत से बचाए हुए पैसे व्यर्थ में चले जाएंगे. इतने पैसों में तो हम लोगों के एक एक सेट नए कपड़े बन सकते हैं."

लल्ला ने कहा, "तुम्हारा कहना सोलहों आने ठीक है. लेकिन सच्चाई का पता भी तो लगना चाहिए."

उर्मिला के मन में तो उथल-पुथल मची हुई थी. उसने एक मिनिट तक सोच-विचार कर मुस्कराते हुए कहा, "भैया, इसमें सच्चाई का क्या पता लगाना है. मैं माने लेती हूं कि वह नाटक बहुत खराब है. बस अब तो खुश हो न?"

अब लल्ला को भी हंसी आ गई. वह बोला, "अरे वाह! हमारी समस्या तो अपने आप ही हल हो गई. अब मैं टिकट निकालने क्यों जाऊं!"

और वे खा-पी कर बिस्तर पर लेट गए.

उधर नारद बाबा के पेट में तो चूहे कूद रहे थे. वह खा-पी कर झट दौड़े हुए आए. उनके पीछे ही वह महिला और उनकी मां-बहन भी खूब लद-फद कर आ गई. दोनों को बिस्तर पर सोए हुए देख कर उन्हें बड़ा अचरज हुआ. सन्नाटा तोड़ते हुए महिला ने कहा, "लल्ला बेटा, टिकट तो तुम जरूर खरीद लाए होगे. अब जल्दी से कपड़े बदल लो. सिर्फ आधा घंटा बाकी है."

नारद बाबा ने भी अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा, "समय हो चला है. अब चल देना ही ठीक है."

यह सुनते ही लल्ला ने कहा, "बाबा, मेरी बहन ने तो स्वीकार कर लिया कि वह नाटक एकदम कंडम है, इसलिए नाटक देखने जाने की आवश्यकता नहीं है."

इतनी बात सुनते ही वे सब चकित हो एक दूसरे का मुंह ताकने लगे.

उर्मिला ने मुसकराते हुए खड़ी हो कर कहा, "मैं एक बार नहीं, सौ बार कहती हूं कि वह नाटक एकदम कंडम है!"

और यह सुनते ही मानो नारद और उनके साथियों पर बिजली गिर पड़ी. उनका चेहरा पीला पड़ गया. उन लोगों ने वापस जाते हुए कहा, "तो, तुम लोग यह क्या नाटक कर रहे थे?"

लल्ला ने कहा, "बाबा, यह सचमुच का नाटक था. आप हमें बेवकूफ बना रहे थे न!" ●

१०४।३६४३, तिलक नगर, चेम्बूर, बंबई.

कइयों ने हा
"ठीक है, मैं
बिना किसी को
एक दूसरी क्लास
अंदर से बंद था.
क्लास में से
की आवाजें आ र
अंदर झांका. अंद
दादाजी ने
पांच मिनिट
खटर-पटर होती
लड़के ने हाथ में
सर, . . . क्लास
बच्चे खड़े
पूछा, "यहां क्या
"जी, मैं
विषय में समझा
क्लास में ए
आसमान पर जा
है आप अंदर बच्
"अजी कहां
अनुभव करते
हम खेल लिये,"
"ठीक है, आ
का दरवाजा भी
फिर वह अप
लगी थी कि जब ये
लेंगे, तो देश का
शोर सुनते
पर वह फंस ग
आया. बोला, "स
नहीं बजेंगी क्या
"ठीक है, ज
ने कह दिया.
घंटी बजी.
को वापस चल दि
दादाजी सब
सैकड़ों किलोमीट
"लालाजी,
ने पूछा.
"अजी, कल
वापस आते

दादाजी का स्कूल (पृष्ठ ७ से आगे)

कइयों ने हाथ उठाए.

"ठीक है, मैं जा कर और जमातों को देखूं," उन्होंने बिना किसी को संबोधित किए कहा और निकल कर एक दूसरी क्लास की ओर बढ़े. उस कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था. धक्के देने पर भी नहीं खुला.

क्लास में से हंसने, चीखने-चिल्लाने, तालियां पीटने की आवाजें आ रही थीं. दादाजी ने खिड़की के शीशे में से अंदर झांका. अंदर बच्चे कबड्डी खेल रहे थे.

दादाजी ने गुस्से में जोर से दरवाजा खटखटाया.

पांच मिनिट तक अंदर चीजों के ठीक किए जाने की खटर-पटर होती रही. फिर दरवाजा खुला. अध्यापक लड़के ने हाथ में पुस्तक खोले बड़े आदर से कहा, "आइए, सर, . . . क्लास स्टैंड!"

बच्चे खड़े हुए. दादाजी ने आंखें लाल करते हुए पूछा, "यहां क्या हो रहा था?"

"जी, मैं इन्हें वास्कोडिगामा की भारत-यात्रा के विषय में समझा रहा था!" अध्यापक लड़के ने उत्तर दिया.

क्लास में एक दबी हंसी फूट पड़ी. दादाजी का पारा आसमान पर जा पहुंचा. चिढ़ कर बोले, "मेरा तो खयाल है आप अंदर बच्चों को कबड्डी खिला रहे थे."

"अजी कहां! वह तो बच्चे पढ़ते पढ़ते कुछ थकावट अनुभव करने लगे थे, दो-चार मिनिट के लिए यों ही हम खेल लिये," बिना झिझक उसने झूठ बोल दिया.

"ठीक है, आप पढ़ाई जारी रखिए. साथ साथ कमरे का दरवाजा भी खुला रखें," दादाजी बोले.

फिर वह अपने कमरे में आ गए. उन्हें यह चिंता खाने लगी थी कि जब ये बच्चे बड़े हो कर देश की बागडोर संभालेंगे, तो देश का क्या बनेगा?

शोर सुनते सुनते दादाजी के सिर-दर्द होने लगा. पर वह फंस गए थे. तभी एक लड़का उनके कमरे में आया. बोला, "सर, आज पीरियड खत्म होने की घंटियां नहीं बजेंगी क्या?"

"ठीक है, जाकर छुट्टी की घंटी बजा दो!" दादाजी ने कह दिया.

घंटी बजी. शोर करते हुए बच्चे अपने अपने घरों को वापस चल दिए. स्कूल खाली हो गया.

दादाजी सबसे बाद में स्कूल में से यों निकले जैसे सैकड़ों किलोमीटर पैदल तय करके आ रहे हों.

"लालाजी, कल भी स्कूल लगेगा क्या?" चौकीदार ने पूछा.

"अजी, कल की कल देखी जाएगी!" दादाजी बोले.

वापस आते हुए उन्होंने मन ही मन कसम खाई कि वह कभी स्कूल नहीं चलाएंगे.

अगले दिन बच्चे फिर स्कूल आए. कल बच्चों को स्कूल में इतना मजा आया था कि वे चाहते थे आज भी स्कूल लगे. आठ बजे तक दादाजी नहीं आए, तो बच्चों ने तय किया कि दादाजी के घर जा कर पता करना चाहिए कि क्या बात है?

बच्चों की एक भारी भीड़ घर आ धमकी, तो मम्मी घबराई. दादाजी ने खिड़की से यह सेना देखी, तो बड़े खुश हुए कि बच्चे उनका इतना सम्मान करते हैं. पर कल की घटनाएं याद आते ही वह सिहर उठे. मम्मी से बोले, "इनसे कह दो कि आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है. आज स्कूल नहीं होगा."

बच्चे यह सुन कर वापस चले गए.

दादाजी को सारे दिन यही चिंता सताती रही कि कल फिर बच्चे आ धमकेंगे, तो वे क्या कहेंगे? रोज रोज तो तबीयत खराब होने का बहाना चल नहीं सकता. इस तरह तो बच्चों को भी बहाना बना कर छुट्टी करने की आदत पड़ जाएगी.

पर अगले दिन अध्यापकों ने हड़ताल तोड़ दी और दादाजी का संकट अपने आप टल गया. ●

९/६७०३ देव नगर, नई दिल्ली –५

'पराग' का आगामी अंक

'स्वाधीनता विशेषांक'

सरस कहानियां : ● शेरनी का दूध : **मनहर चौहान** ● भीख और दान : **रामकुमार भ्रमर** ● जादू का घोड़ा : **डी. के. जैन** ● खून की दो बूंदें : **जे. एच. आनंद** ● महारानी के आभूषण : **डा. देवेश ठाकुर** ● कलंक का बोझ : **अवध अनुपम** ● छोटूराम : **वेद राही** ● हाथी हिंदुस्तान : **अमृतलाल वेगड़**

एकांकी : ● हड़ताल : **विष्णु प्रभाकर**

साहसिक बाल-उपन्यास : ● फूल खिल उठे (दूसरी किस्त) : **बलवंतसिंह**

इनके अलावा अनेक रोचक लेख, चटपटी कविताएं, व्यंग्य भरे कार्टून, इंद्रधनुषी छटा-वाले रंगीन चित्र

पृष्ठ ६४ की बजाय ८०

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लो

जंगल की हास्यकथा

शेर से भिड़ंत

एक दिन एक किसान गांव के बाहर अपने खेत में हल जोत रहा था. उसी समय वहां एक शेर आ पहुंचा और किसान से कहने लगा, "अरे किसान, अगर तुझे अपनी जिंदगी प्यारी है, तो चुपचाप अपने दोनों बैलों में से एक मुझे खाने के लिए दे दे." किसान बेचारा कमजोर दिल वाला था, शेर को देखते ही उसके तो होश गुम हो गए. वह कांपते हुए अपने दोनों बैलों में से एक की रस्सी खोल कर उसको देने लगा कि तभी अचानक उसके दिमाग में एक बात आई—'अगर मैं बैल की जगह पर अपनी गाय शेर को खाने के लिए दे दूं, तो भला शेर को क्या ऐतराज होगा? अगर शेर ने मेरा एक बैल खा लिया, तो मैं खेत कैसे जोतूंगा? अगर खेत न जोता गया, तो फसल कैसे पैदा होगी? फसल पैदा नहीं होगी, तो मैं भूखा मर जाऊंगा.' इसलिए वह शेर से कहने लगा, "शेर राजा, बैल आपकी सेवा में हैं, लेकिन अगर कहो तो मैं आपको घर से गाय ला दूं, क्योंकि इनके बिना तो मैं काम ही नहीं कर सकूंगा और घर का गुजारा भी नहीं चल सकेगा."

शेर को भी किसान पर तरस आ गया और वह मान गया. किसान भागा भागा घर गया और माथे पर हाथ रख कर रोने लगा. उसकी स्त्री ने रोने का कारण पूछा, तो उसने सारी बात बताई और कहने लगा, "जल्दी से गाय खोल कर दे दे, कहीं शेर मेरे दोनों बैल न खा जाए."

लेकिन उसकी स्त्री इस पर बहुत बिगड़ी—"मैं अपनी प्यारी गाय कभी नहीं दूंगी, क्योंकि दूध के बिना मैं एक दिन भी नहीं रह सकती." थोड़ी देर तक दोनों इसी बात पर झगड़ते रहे. किसान की स्त्री बड़ी चतुर और साथ साथ दिल वाली थी. उसने झट से एक तरकीब खोज निकाली और किसान से बोली, "तुम खेत की तरफ जाओ और शेर से कह दो कि मेरी स्त्री तेरे लिए एक मोटा-ताजा घोड़ा ले कर आ रही है." किसान पहले तो माना नहीं, लेकिन उसके जोर देने पर डरता डरता खेत पर पहुंचा और शेर से हाथ जोड़ कर बोला, "शेर राजा, थोड़ी देर और इंतजार करो. मेरी स्त्री अभी आपके लिए एक मोटा-ताजा घोड़ा ले कर आ रही है." घोड़े का नाम सुन कर शेर के मुंह में पानी भर आया और वह आराम से इंतजार करने लगा.

इधर किसान की स्त्री ने काले कपड़े पहन लिये. बालों को खोल कर कंधों पर बिखेर लिया और कुछ को गले में लपेट लिया और सिर पर एक बड़ी-सी पगड़ी बांध ली. अपने एक हाथ में चमचमाती तलवार पकड़ ली और घोड़े पर सवार होकर खेत की तरफ चल दी. वहां शेर को बैठे देख कर भी वह बिल्कुल नहीं घबराई. सीधी शेर के सामने जा कर खड़ी हो गई और निधड़क होकर किसान को डांटते हुए बोली, "मूर्ख, इस एक शेर से क्या होगा! तू तो कह रहा था कि मेरे खेत में चार शेर बैठे हैं. बाकी तीन शेर कहां गए? मैं तो चारों को एक साथ ही खाऊंगी!"

शेर ने जब यह सुना, तो वह घबरा गया और वहां से खिसकने की सोचने लगा. तभी किसान की स्त्री घोड़े से उतरी और जोर से चिल्लाती हुई शेर की तरफ लपकी, "अच्छा, पहले तुझे ही खा लेती हूं, औरों को फिर सही."

इतना सुनना था कि शेर वहां से सिर पर पैर रख कर भाग खड़ा हुआ. किसान और उसकी स्त्री शेर को

भागते देख कर खू
चतुराई की प्रशंसा
कमाल कर दिया!

किसान के खेत
एक घड़ियाल यह स
हैरान हो रहा था.
चला, वह भाग कर
लगा, "जहांपनाह,
पड़ी थी, जो आप
ले कर, डरती-सी अ
अपने प्राण बचा कर
मुझे एक डायन खा
बोला, "कौनसी डा
आप बहुत भोले हैं,
उसकी बात पर वि
कहा, "अगर नहीं मा

उसके बहुत
गया और बोला, "अ
बांध ले, तो मैं तेरे
नहीं जाऊंगा क्योंकि
धोखा न दे दे." घ
के साथ बांध ली औ

किसान और उ
रहे थे. अचानक
और वह अपनी स्त्री

— देवेन्द्र

kissekahani.com

भागते देख कर खूब हंसे. किसान उसकी निडरता और चतुराई की प्रशंसा करते हुए बोला, "तूने तो वाकई कमाल कर दिया! अच्छी तरकीब लगाई!"

किसान के खेत के पास ही एक पेड़ के पीछे बैठा एक घड़ियाल यह सब कुछ देख-सुन रहा था और बड़ा हैरान हो रहा था. ज्यों ही उसे असली बात का पता चला, वह भाग कर शेर के पास पहुंचा और उससे पूछने लगा, "जहांपनाह, आज आप पर कौन-सी मुसीबत आ पड़ी थी, जो आप भाग खड़े हुए थे." शेर थोड़ी सांस ले कर, डरती-सी आवाज में कहने लगा, "मुश्किल से अपने प्राण बचा कर यहां तक पहुंचा हूं, भाई. आज तो मुझे एक डायन खाने लगी थी." घड़ियाल हंसते हुए बोला, "कौनसी डायन! वह तो किसान की बहू थी. आप बहुत भोले हैं, एक औरत से ही डर गए!" शेर को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ. लेकिन घड़ियाल ने कहा, "अगर नहीं मानते, तो खुद चल कर देख लो."

उसके बहुत जोर देने पर आखिर शेर तैयार हो गया और बोला, "अगर तू मेरी पूंछ के साथ अपनी पूंछ बांध ले, तो मैं तेरे साथ खेत तक जा सकता हूं. वैसे नहीं जाऊंगा क्योंकि मुझे डर है कि कहीं तू ही मुझे धोखा न दे दे." घड़ियाल ने अपनी पूंछ शेर की पूंछ के साथ बांध ली और दोनों वापस आने लगे.

किसान और उसकी स्त्री अभी वहीं बैठे बातें कर रहे थे. अचानक किसान की नजर उन दोनों पर पड़ी और वह अपनी स्त्री से घबरा कर बोला, "दिलवाली, अभी बला गई नहीं, वह दे[illegible] केवल एक आ रहा है. अच्छा, चलो भा[illegible] ए पोस्ट-

स्त्री सावधान हो गई [illegible] मत. तू निडर हो कर खड़ा रह. [illegible] 'ग' के

तभी शेर और घड़ियाल पूंछ [illegible] : आ पहुंचे. शेर की आंखों में गुस्सा उभर [illegible] उसके दिल से अभी डर भी नहीं गया था. कि[illegible] स्त्री ने उन्हें देखते ही फड़कती आवाज में घड़ियाल[illegible] पूछा, "तू तो कह रहा था कि अभी मैं चार शेर अपनी पूंछ से बांध कर लाता हूं. लेकिन यह क्या? तू तो एक ही शेर लाया है, बाकी तीन शेर कहां छोड़ आया है?" यह सुनते ही शेर के पैरों तले से जमीन खिसक गई. उसे पक्का निश्चय हो गया कि घड़ियाल का उस डायन के साथ कोई समझौता है, इसी लिए वह उसे मरवाने के लिए यहां पकड़ लाया है. शेर बड़ी तेजी से पीछे की तरफ पलटा. घड़ियाल ने उसे सच्चाई बताने के लिए रोकना चाहा और उसे अपनी तरफ खींचा. इससे शेर का संदेह और भी पक्का हो गया. वह जोर लगा कर भागने लगा, बेचारा घड़ियाल भी उसके पीछे पीछे ही खिंचता चला गया और दोनों रास्ते में ही पत्थरों से टकरा टकरा कर लहूलुहान हो गए.

इस प्रकार किसान की स्त्री ने अपनी चतुराई और निडरता से अपने बैल, घोड़ा, गाय—सभी शेर के पंजे से बचा लिये. ●

एफ ११६।२ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७.

kissekahani.com

भोलू भाई की भूल भुलैया-९

सच और झूठ का निर्णय

कुछ दिनों से भोलू भाई को एक नई बीमारी लग गई थी. जब भी कभी कोई उनसे कोई ऐसी बात कहता, जो उनकी बुद्धि में न समाती, वह झट से बोल उठते—"तुम झूठ बोलते हो!"

जहां तक संगी-साथियों का सवाल है, वे तो उनका यह मुहावरा हंस कर उड़ा देते, मगर कोई भी मुहावरा जहां एक बार जबान पर चढ़ा, तो बोलने वाला इस बात का लिहाज नहीं करता कि सुनने वाला कोई बड़ा है या छोटा. यों तो बदतमीजी की कोई भी बात बुरी लगती है—चाहे कोई बड़ा आदमी बोले या छोटा—लेकिन

बच्चों के मुंह से तो और भी ज्यादा बुरी लगती है. सब माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे गंदी जबान न सीखें.

एक दिन भोलू भाई ने अपने पिताजी से चाकलेट लाने के लिए कहा. उन्होंने संध्या को चाकलेट लाने का वादा किया. लेकिन संध्या समय वह अपने काम-धाम में इतना व्यस्त रहे कि काफी रात बीते घर आए. भोलू भाईने उनके आते ही चाकलेट का राग अलापा. उन्होंने सीधे स्वभाव चाकलेट न ला पाने का कारण बताया. छूटते ही भोलू भाई की जबान से निकला—"ऐं ऐं, तुम तो झूठ बोलते हो!"

तड़ाक से पिताजी के बाएं हाथ का एक करारा तमाचा भोलू भाई के गाल पर बैठा. भोलू भाई को कमरे की छत में ही तारे दिखाई देने लगे. खूब रोए. उनके पिताजी ने उनकी इस आदत की चर्चा अपने एक मित्र से की. मित्र महोदय एक दिन उनके साथ उनके घर आए और भोलू भाई को सामने बैठा कर बोले :

"देखो, बेटे, सच-झूठ का निर्णय करना टेढ़ी खीर होता है. जिन बातों को तुम सच मानते हो, उनमें अनेक झूठी होती हैं."

भोलूभाई ने कहा, "वाह! सच सच होता है, झूठ झूठ होता है."

मित्र महोदय हंसे, और बोले, "अच्छा, हम तुम्हारे सामने दस बातें रखते हैं. तुम्हें सच और झूठ का पता लगाना है. देखें तुम्हरी बुद्धि कहां तक चलती है."

भोलू भाई तुरंत तैयार हो गए. मित्र महोदय ने निम्नलिखित बातें उनके सामने लिख कर रखीं, फिर उनसे कहा कि जो बात सच हो, उसके सामने 'झूठ' शब्द काट दें, और जो झूठ हो उसके सामने का 'सच' शब्द काट दें :

१—जो कोई भविष्य की घटनाओं की निश्चित भविष्यवाणी करने का दावा करता है, वह धोखेबाज होता है. सच / झूठ

२—अगर तुम अपने हाथ की नंगी उंगली काफी से भरे प्याले में डालोगे, तो वह भीग जाएगी. सच / झूठ

३—अगर तुम
शीशे के
हों, तो
छुआ होग

४—अगर मैं
सकता हूं,
को देख
के देखने

५—यदि तुम
में छलांग
तुम्हारा

६—यदि तुम्ह
की स्टाम्प
उसने तुम
वह तुम प
ठोंक सकत

७—यदि तुम
कुल पीले
में मिला

८—अगर तुम्हे
की
कोई कसूर

९—जनवरी के
स्थान का
तो वह दि

१०—२९ फरवरी
अपना जन्म
है.

(बच्चो, भोलू
झूठ का पूर्ण निर्णय
न कोई गलत हो
अपने उत्तर १५

३–अगर तुम्हारी उंगलियों के निशान किसी शीशे के गिलास पर पड़े निशानों से मिलते हों, तो अवश्य ही तुमने उस गिलास को छुआ होगा. सच / झूठ

४–अगर मैं शीशे में तुम्हारी आंखों को देख सकता हूं, तो तुम भी निश्चय ही मेरी आंखों को देख सकते हो, बशर्ते कि तुम्हारी आंखों के देखने की शक्ति सुरक्षित हो. सच / झूठ

५–यदि तुम कुतुबमीनार के ऊपर चढ़ कर हवा में छलांग लगा दो, तो नीचे पहुंचते ही तुम्हारा दम निकल जाएगा. सच / झूठ

६–यदि तुम्हारे पास किसी आदमी के हाथ की स्टाम्प-और-हस्ताक्षर-युक्त रसीद है कि उसने तुमसे इतना धन वसूल पाया, तो वह तुम पर वही धन न मिलने का दावा नहीं ठोंक सकता. सच / झूठ

७–यदि तुम बिलकुल साफ नीले रंग को, बिलकुल पीले रंग के साथ बराबर बराबर मात्रा में मिला दो, तो साफ हरा रंग बन जाएगा. सच / झूठ

८–अगर तुम्हें अपनी कक्षा के कमरे में घुसने की अनुमति न मिले, तो अवश्य ही तुमने कोई कसूर किया है. सच / झूठ

९–जनवरी के महीने में अगर बाहर छायादार स्थान का अधिकतम तापमान ९० डिग्री रहे, तो वह दिन मौसम के प्रतिकूल होगा. सच / झूठ

१०–२९ फरवरी को जन्म लेने वाला हर मनुष्य अपना जन्म दिन हर चौथे साल मना सकता है. सच / झूठ

(बच्चो, भोलू भाई ने बहुत कोशिश की, लेकिन सच-झूठ का पूर्ण निर्णय नहीं कर सके. उनके जवाबों में कोई न कोई गलत हो जाता था. तुम उनकी मदद करो न! अपने उत्तर १५ जुलाई तक पोस्ट कार्ड पर नीचे दिया हुआ टोकन चिपका कर भेजो. एक टोकन केवल एक नाम से भेज सकते हो. बिना टोकन चिपके हुए पोस्ट-कार्डों पर विचार नहीं किया जाएगा.

जिनके सभी उत्तर सही होंगे उनके नाम 'पराग' के सितंबर अंक में छापे जाएंगे. उत्तर इस पते पर भेजो : भोलू भाई की भूलभुलैया नं. ९, 'पराग', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.)

भोलू भाई की भूलभुलैया नं. ७
भूल सुधार और सही उत्तर

इस संबंधों के चक्कर में हम भी ऐसा फंसे कि स्वयं भूलभुलैया में ही एक भूल हो गई. दूसरे कालम की दसवीं पंक्ति में, कोष्टक नं. २ से पहले, जो संवाद छपा है, उसमें 'श्रीमती उषा खन्ना' के नाम के स्थान पर 'श्रीमती उषा खन्ना की सौतेली लड़की' छपना चाहिए था. इस भूल के लिए हमें खेद है.

सही उत्तर इस प्रकार होगा—

(१)–श्री वर्मा की बहन का नाम : श्रीमती उषा खन्ना.

(२)–श्रीमती उषा खन्ना की सौतेली लड़की का नाम : श्रीमती मोहिनी वर्मा.

(३)–श्रीमती मोहिनी की ननद का नाम : श्रीमती उषा खन्ना.

(४)–श्री खन्ना के जमाई का नाम : श्री राजेश वर्मा.

(५)–श्री वर्मा के बहनोई का नाम : श्री रमेश खन्ना.

(६)–श्रीमती खन्ना के सौतेले जमाई का नाम : श्री राजेश वर्मा.

(७)–श्री खन्ना की लड़की का नाम : श्रीमती मोहिनी वर्मा.

(८)–श्री वर्मा की बहन का पूरा नाम : श्रीमती उषा खन्ना.

(९)–श्रीमती खन्ना के कौमार्य का नाम : कुमारी उषा वर्मा.

(१०)–श्रीमती वर्मा के कौमार्य का नाम : कुमारी मोहिनी खन्ना.

वास्तव में हुआ यह कि बहुत पहले श्री राजेश वर्मा ने श्री रमेश खन्ना की लड़की कुमारी मोहिनी खन्ना से शादी की थी. श्री खन्ना उस समय विधुर हो चुके थे. कुछ समय बाद उन्होंने श्री राजेश वर्मा की बड़ी बहन कुमारी उषा वर्मा से विवाह कर लिया. इस से वह श्रीमती उषा खन्ना हो गई.

दो कविताएं

kissekahani.com

घुमक्कड़ बादल!

आज हावड़ा, तो दिल्ली कल,
चले सैर करने दल के दल,
चढ़े हवाओं के घोड़ों पर;
सचमुच बड़े घुमक्कड़ बादल!

कभी दौड़ की होड़ लगाते,
बिजली के कोड़े चमकाते,
नीले नभ के रंगमंच पर
क्षण क्षण रूप बदल कर आते!

कभी बिल्लियों से लड़ते हैं,
कभी हाथियों से अड़ते हैं!
कभी हमारे आंगन, छत पर
बूंदें बन कर गिर पड़ते हैं!

सूरज को ढक लेते पल में,
अपने रूई से आंचल में;
खुश होते हैं अपना मुखड़ा—
देख देख झीलों के जल में!

पर्वत की चोटी तक जाते,
इंद्रधनुष को छू छू आते!
जंगल-घाटी, नदियां-नाले,
सब के पार छलांग लगाते!

धुआं सरीखे, फिर भी शीतल,
भारी भरकम, फिर भी चंचल;
दुनिया के गोले का चक्कर—
खूब लगाते हंस हंस बादल!

—सीताराम गुप्त

जानते हो कौन है?

यह जो चंचल-सा
नटखट शिशु,
सुरमई परिधान पहने,
अंबर की गोद से
रपट रपट कर
भागा जाता है,
जानते हो कौन है?
कभी तो यह नटखट
पीछे से आकर
सूरज की आंखों पर
हाथ ढक देता है;
और फिर,
दूर भाग जाता है,
मुड़-मुड़ कर पीछे को
देख मुसकराता है!
जानते हो कौन है?

यह ही शरारती
चांद के मुखड़े पर
अपनी स्याही भरी
दावात उड़ेल देता है,
देख देख चांद के
बदरंग चेहरे को,
खूब खिलखिलाता है!
जानते हो कौन है?
पवन जब चांटे तड़ातड़
इसके गालों पर जड़ता है,
तब क्रोध में यह शिशु
गर्जना करता है!
रो रो कर आंसू से
घर-आंगन भरता है!
चंचल बिजली तब
रक्षा को आती है,
पवन को डराती है,
कोड़ा दिखाती है!
जानते हो कौन है?
नहीं जानते न!
तो सुनो,
यह नटखट,
शरारती चंचल,
रुई-सा हल्का,
फूल-सा कोमल,
है आकाश का
लाड़ला बेटा
बादल!

—उषा गुप्ता

राम गुप्त

आदमी का चेहरा... पशु

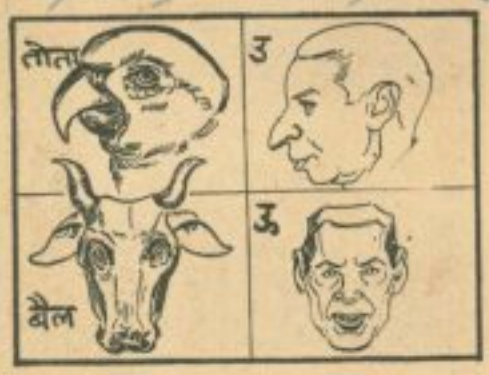

बच्चो, जब तुम किसी के चेहरे को देखते हो, तो तुम्हारी नजर फौरन उसकी नाक पर जाती है. तुम उसके आकार को भी देखते हो कि वह कैसी है. हर आदमी की नाक किसी न किसी जानवर की नाक से मिलती-जुलती है. कभी कभी तो यह समानता चकित कर देने वाली होती है. अपनी चारों ओर के आदमियों को देखो. उनके पूरे चेहरों को अगर पशुओं के चेहरों से मिलाओ,तो तुम्हें नाक के अतिरिक्त आंखों और ललाट में भी यह समानता मिलेगी. लेकिन यह समानता केवल चेहरों या उसके अंगों तक ही सीमित नहीं रहती, बल्कि मनुष्यों और पशुओं की आदतों और व्यवहार में भी पाई जाती है.

अब इस पृष्ठ पर दिए चित्रों को देखो. चित्र 'अ' को देखते ही तुम्हें किस चीज का खयाल आता है? ध्यान से देखो. मनुष्य का चेहरा लगभग वैसा ही है जैसा मछली का चेहरा. मछली की आदतें, और ढंग देख कर उसके समान चेहरे वाले आदमी के बारे में कई बातें जानी जा सकती हैं. अब चित्र 'आ' को देखो. पहचान गए? है न मेंढक का चित्र. अब इसके साथ में बना चेहरा देखो, बिल्कुल मेंढक जैसा ही है. चित्र 'इ' में गीदड़ का चेहरा है और उसी के समान आदमी का चेहरा भी लगता है. अब चित्र 'ई' पर नजर डालो. कुत्ते से मिलता-जुलता चेहरा आदमी का है. चित्र 'उ' को देखें, तो तोते से मिलते-जुलते चेहरे और नाक वाले आदमी को पाते हैं. चित्र 'ऊ' में बैल के समान चेहरा दिखाया गया है. चित्र 'ए' में एक ऐसा चेहरा है, जो उल्लू के समान है. चित्र 'ऐ' के बंदर को देखो. आदमी का चेहरा इसके समान है ही.

इन चित्रों को देखने से तुम्हें पता चलेगा कि कुछ आदमियों के चेहरे पशु-पक्षियों या पानी में रहने वाले प्राणियों के समान होते हैं. आकृति-वैज्ञानिकों का कहना है कि मनुष्य के चेहरे को देख कर यह पता चल सकता है कि उसमें किस प्राणी के गुण वर्तमान हैं.

इसी तरह नाक की बनावट के आधार पर यह पता लगाया जा सकता है कि इस तरह के चेहरे वाले लोगों में क्या क्या गुण विशेष होते हैं. इसके लिए सामने के पृष्ठ के चित्रों को देखो. चित्र १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, २०, २१, २२ जैसे चेहरों को तुम प्रायः आसानी से समझ सकते हो, जबकि चित्र १२, १३, १४, १५, १६ १७, १८, १९ के चेहरे थोड़े पेचीदा हैं. इनमें चित्र १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, २० २१, २२ जैसी कुछ बातें तो हैं ही, इनके अलावा उनमें

कुछ अपनी विशेष
बात का पता चल
विशेष कोणवाली
खोपड़ी का आकार
प्रकार के गुण नहीं

अब हमें अलग
में पाई जाने वाली
पहले चित्र १,२,३
एक जैसा ही है
व्यवहार और च
वाले लोगों में सीधे
और वे कोई भी
जिन लोगों की
कई चीजें छिपा
बातें पूरी तरह सुन
ऐसे लोग बातें छि
होते. चित्र ३ वा
उनमें नेता या

होते हैं.

अब चित्र ४
लगते हैं. ऐसे लोग
नहीं होते और अप
मन में अच्छी अच्छ
वे दूसरे के काम में
५ के जैसी नाक
करने वाले होते हैं

देखो चित्र
होती है ऐसे लोगों
से वे कायर होते हैं
ताकत इतनी नहीं
कर सकें. चित्र २
थोड़ा भिन्न है. ना
ऐसे लोग किसी
उनमें इतना साहस
के लोगों के समान

अब चित्र ६,
से हंसोड़ और मस
जोकरों को देखते
हैं. ऐसे लोग ब
किसी चीज पर
काम को पूरा न

कुछ अपनी विशेषताएं भी हैं. इन चित्रों से एक विशेष बात का पता चलता है कि जब तक किसी आदमी की विशेष कोणवाली नाक और उससे मेल खाता हुआ उसकी खोपड़ी का आकार नहीं होता, तब तक उसमें एक विशेष प्रकार के गुण नहीं आते.

अब हमें अलग अलग चित्रों को देख कर उस आदमी में पाई जाने वाली विशेष बातों को समझना है. सबसे पहले चित्र १,२,३ को देखो. उनमें नाक का कोण लगभग एक जैसा ही है लेकिन बनावट भिन्न होने से इनके व्यवहार और चरित्र जुदा जुदा होंगे. चित्र १ जैसी नाक वाले लोगों में सीधी-सादी बात कह देने का गुण होता है और वे कोई भी बात दूसरों से छिपा नहीं सकते. जिन लोगों की नाक चित्र २ के समान होती है, उनमें कई चीजें छिपा सकने का गुण होता है. वे दूसरों की बातें पूरी तरह सुन लेने के बाद ही अपनी बात कहते हैं. ऐसे लोग बातें छिपा जरूर सकते हैं, पर वे चालाक नहीं होते. चित्र ३ वाले लोग जरूर चालाक होते हैं और उनमें नेता या शासक या कूटनीतिज्ञ बनने के गुण

...चेहरा...पशुओं का मोहरा

— भानुप्रसाद त्रिवेदी

होते हैं.

अब चित्र ४ और ५ देखो. ऐसे चेहरे कितने सुडौल लगते हैं. ऐसे लोग भले और होशियार होते हैं. वे स्वार्थी नहीं होते और अपने काम से काम रखते हैं. उनके मन में अच्छी अच्छी बातें सीखने की इच्छा रहती है. वे दूसरे के काम में दखल नहीं देते. जिन लोगों की चित्र ५ के जैसी नाक होती है, वे दूसरों की भलाई का काम करने वाले होते हैं.

देखो चित्र २०, २१, २२. जिनकी नाक छोटी होती है ऐसे लोगों में साहस की कमी होती है और स्वभाव से वे कायर होते हैं. उनके दिमाग होता है, पर शारीरिक ताकत इतनी नहीं होती कि अपने विचारों को पूरा कर सकें. चित्र २२ में जो चेहरा बताया गया है. वह थोड़ा भिन्न है. नाक सीधी और उभरे हुए सिरे वाली है. ऐसे लोग किसी काम को करने की बात सोचते हैं, पर उनमें इतना साहस नहीं होता कि वे चित्र ३ और ११ के लोगों के समान उसे खुद पूरा कर सकें.

अब चित्र ६,७,८ देखो. ऐसे चेहरे प्रायः स्वभाव से हंसोड़ और मसखरों के होते हैं. तुम सरकस में जिन जोकरों को देखते हो वे चित्र ६ जैसी नाक वाले होते हैं. ऐसे लोग बहुत बातूनी और गप्प मारने वाले, किसी चीज पर भरोसा न करने वाले होते हैं. वे किसी काम को पूरा नहीं कर सकते. केवल चित्र ७ जैसी

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

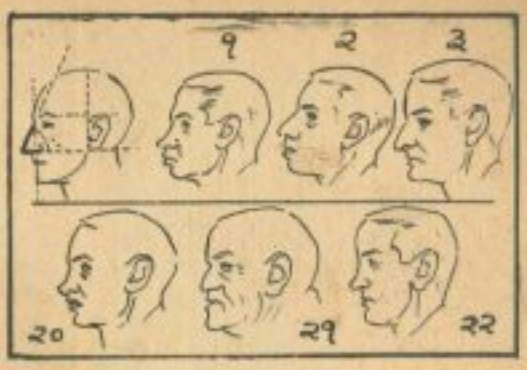

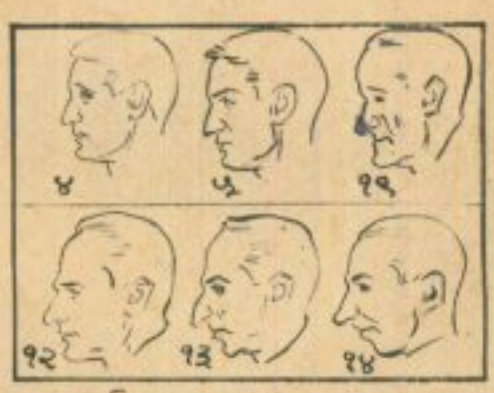

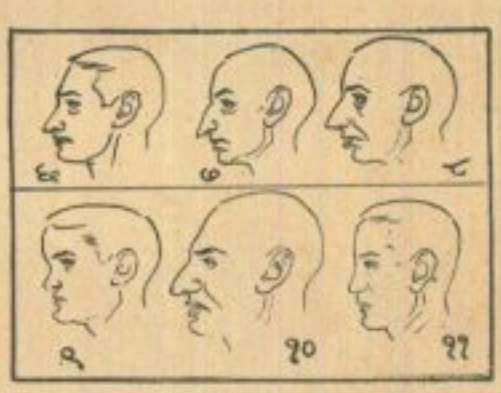

फिल्मी परी लोक

बेबी सोनिया

छाया : डी. आर. यादव

फिल्म 'दो कलियां' देखने वालों को बेबी सोनिया का नाम याद होगा. उसकी शक्ल भी याद होगी—नटखट-सी, बड़ी बड़ी आंखों वाली.

कहती है : "मैं जिस स्कूल में पढ़ती हूं वहां इस फिल्म ने मेरी मुसीबत कर दी है. लड़के और लड़कियां तरह तरह के सवाल करते हैं. भला मैं हरेक का जवाब कैसे दूं? दूंगी भी कैसे—अभी मैं इतनी बड़ी भी कहां हुई हूं कि फटाफट हरेक को जवाब देती जाऊं. शरारती लड़के कहीं से भी आ कर मार कर भाग जाते हैं. बोलिए, भला उन्हें क्या मिलता है मुझे मार कर भागने में? वे मारेंगे, तो भला क्या मुझे फिल्मों में काम नहीं मिलेगा? और देखो तो, स्कूल की लड़कियां हैं कि उनका अलग ही दिमाग रहता है. जिस से थोड़ी देर बात न करो वही मुंह फुला कर बैठ जाती है—इस तरह,'. . . और फिर वह फूला हुआ मुंह बना कर दिखाती है. . . "बताइए न मेरा क्या कसूर है? मैं क्या पच्चीस लड़कियों से एक साथ और हर वक्त बात कर सकती हूं?"

यह पटर पटर बोलने वाली सोनिया अभी आठवीं क्लास में पढ़ती है. अक्सर अपने मां-बाप से कहती है : "मेरा घर में जी नहीं लगता. कोई है ही नहीं साथ खेलने के लिए. मेरी जितनी सहेलियां हैं सब के दो-दो चार-चार बहन या भाई हैं खेलने के लिए और मैं अकेली!"

मां-बाप के सामने विचित्र परिस्थिति खड़ी कर देती है यह नन्ही-सी छुकरिया. तब मां या तो पड़ोस के बच्चों को बुलवाती है उसके साथ खेलने के लिए या पड़ोसियों के घर ही उसे भेज देती है.

सोनिया के पिताजी से या मां से जब कोई मिलने आता है, तो सोनिया मौका देखती रहती है कि कब उससे

बातें करने की जुगत
दम पूछती है—"आप

सुनने वाला आश
सोनिया बड़ी खुश हो
सकती है जो कोई अ
अपने कान हिला कर
सिर का भी थोड़ा-सा
की हंसी छूट पड़ती है.

कान के बाद वह
आती है. अपनी अंगुलि
पर इस तरह घुमाती
है. फिर देखने वाले से
दिखाइए." बड़ी उलझ
के सामने. वह कोशिश
तो सोनिया उछल उछ

सोनिया को सबसे
है कि कोई उसे नासमझ

बातें करने की जुगत लगे. जहां बात शुरू हुई कि एकदम पूछती है—"आप अपने कान हिला सकते हैं?"

सुनने वाला आश्चर्य से जब इनकार करता है, तो सोनिया बड़ी खुश होती है, क्योंकि वह एक काम कर सकती है जो कोई और कर ही नहीं सकता. वह तुरंत अपने कान हिला कर दिखाती है. कानों के साथ उसके सिर का भी थोड़ा-सा हिस्सा हिलता है, तो देखने वालों की हंसी छूट पड़ती है.

कान के बाद वह अपनी अंगुलियों के प्रदर्शन पर आती है. अपनी अंगुलियों को एक एक कर के एक दूसरी पर इस तरह घुमाती है कि गोल-दायरा-सा बन जाता है. फिर देखने वाले से कहती है : "आप भी ऐसा ही करके दिखाइए." बड़ी उलझन खड़ी हो जाती है सामने वाले के सामने. वह कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता, तो सोनिया उछल उछल कर तालियां बजाती है.

सोनिया को सबसे बड़ा ऐतराज इस बात पर होता है कि कोई उसे नासमझ कहे. वह बड़ी शान से कहती है, "मैं सब कुछ जानती हूं. परसों एक अंकल बोले कि मुझे चूजा का मतलब नहीं मालूम. भला यह क्या कोई मुश्किल शब्द है? चूजा मुर्गी के बच्चे को कहते और मुर्गा मुर्गी के हस्बैंड को कहते हैं!"

अपने आप को बड़े ज्ञानी-ध्यानी के रूप में पेश करने वाली सोनिया अब से पहले भी दो फिल्मों में काम कर चुकी है. पहली थी 'सूरज' और दूसरी थी 'दस लाख'. 'दो कलियां' के बाद अब आने वाली नई फिल्म है 'दो दूनी चार.'

सोनिया को उसके जन्म-दिन पर जो कोई बधाई देने आता है उसको खाने के लिए टॉफी और केक देती है. आप भी अगर टॉफी या केक खाना चाहें, तो उसके जन्म-दिन पर मिल लीजिए ८ जुलाई को. पता है—सोनिया, द्वारा श्रीमती राजी सिंह, १४ शिव सदन, चौथा माला, सी रोड, चर्चगट, बंबई.

—सुनीलकुमार त्यागी

फूल खिल उठे (पृष्ठ १५ से आगे)

नहीं दे रहा था. मंजू और दूसरे बच्चे उनके करीब ही आ खड़े हुए थे और बेचारे रो रहे थे. राजू ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा, "वाह! इसमें रोने की क्या बात है? जीवन में दुर्घटनाएं तो होती ही रहती हैं. हमारा कर्तव्य यह है कि हम उनका बहादुरी से मुकाबला करें."

नन्हे बच्चों को तसल्ली देने के लिए राजू ने यह बात कह तो दी, लेकिन मन ही मन वह परेशान हो उठा था, क्योंकि उसने अंग्रेजी फिल्मों में देखा था कि अक्सर हवाई जहाजों के टकराने से आग लग जाती है. उनके जहाज में एकदम आग तो नहीं लगी, लेकिन धुआं भर रहा था. जिसका मतलब यह था कि न जाने किस समय एकदम आग भड़क उठे.

वह इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि कृपालसिंह ने आगे बढ़ कर अपने सिर से पगड़ी खोली और बोला, "मेरे खयाल में हम इस पगड़ी से रस्से का काम ले सकते हैं."

यह कहते ही कृपालसिंह ने पगड़ी का एक सिरा दरवाजे के पास लगी हुई हत्थी से बांध दिया और पगड़ी को नीचे लटका दिया. पगड़ी का दूसरा सिरा जमीन से कुछ फुट ऊंचा ही था, लेकिन फिर भी अब उनके लिए उतरना असंभव नहीं था. राजू ने कृपालसिंह से कहा, "अच्छा, कृपालसिंह, पहले तुम ही उतरो, मैं अभी ऊपर ही रहूंगा ताकि दूसरे बच्चों को भी उतार सकूं."

कृपालसिंह ने उत्तर दिया, "तुम मुझे पाल कह कर बुलाया करो . . . अच्छा तो हमें एक एक करके उतरने में बहुत देर लगेगी, समय इतना है नहीं."

यह कह कर कृपाल ने अपनी बहन बेबी को गोद में उठा लिया और उससे कहा कि वह अपने दोनों बाजू उसके गले में डाल कर अच्छी तरह लटक जाए. फिर उसने मंजू से कहा कि वह उसकी पीठ पर सवार हो जाए. राजू को तरकीब पसंद आई. इस तरह कृपाल दो बच्चों को ले कर धीरे धीरे नीचे उतर गया. जब वह पगड़ी के आखिरी सिरे से लटका हुआ था, तो उसने अपने आगे-पीछे लटकी हुई नन्ही लड़कियों से कहा, "देखो, अब मैं पगड़ी छोड़ कर नीचे गिरने वाला हूं. तुम लोग घबराना नहीं, चोट किसी को भी नहीं आएगी."

यह कह कर उसने पगड़ी छोड़ दी. वह एकदम जो जो गिरा, तो बोझ के कारण अपने पांव पर खड़ा नहीं रह सका. इसलिए वे तीनों ताबड़-तोड़ धरती पर गिरे. चूंकि जमीन ढालू थी इसलिए वह इधर-उधर बिखर गए. मंजू को हंसी आ गई.

फिर जहाज में से लतीफ दो बच्चों को ले कर इसी तरह उतरा. जल्दी जल्दी सभी बच्चे उतार लिये गए. तब राजू ने जहाज की अगली ओर से हल्की-सी आग निकलती देखी. गहरे धुएं में उसे और कुछ दिखाई नहीं दिया. केवल एक बेहोश लड़का जिसकी उम्र छह साल के करीब होगी उसके पांव के पास पड़ा था. इतने में नीचे से उसके साथियों की जोर जोर की आवाजें आने लगीं, "राजू! राजू! फौरन नीचे चले आओ. . . जहाज को आग लग रही है!"

इतने में जहाज के एक हिस्से से जोर की आग का भभका दिखाई दिया. राजू ने फौरन बेहोश लड़के को अपने कंधे पर डाला और पगड़ी से लटक कर जल्दी जल्दी नीचे उतरने लगा. नीचे खड़ी मंजू रोने लगी क्योंकि उसे डर लगा कि कहीं राजू के नीचे पहुंचने से पहले ही पूरा जहाज भड़भड़ा कर जल न उठे.

राजू बहुत धीरे धीरे उतर पा रहा था, क्योंकि उसे बेहोश लड़के को भी संभालना पड़ रहा था. सबकी नजरें उसी पर टिकी हुई थीं. आखिर वह नीचे आ पहुंचा. सबसे पहले नीचे वालों ने बेहोश बच्चे को संभाला और फिर राजू पगड़ी छोड़ कर जमीन पर आ गिरा.

नीचे उतरते ही राजू ने चिल्ला कर कहा, "अरे, तुम लोग सब यहां क्यों खड़े हो? जो कहीं जहाज के पेट्रोल तक आग पहुंची, तो जहाज की टंकी बम की तरह फट जाएगी . . . चलो दौड़ो!"

वे सब एकदम भागे. इतने में जहाज भड़भड़ा कर जल उठा. तब राजू ने एक बड़ी चट्टान की ओर इशारा किया, "आओ, हम इस चट्टान के पीछे छिप जाएं."

फिर वे एकदम झपट कर उस ऊंची चट्टान की ओट में जा छिपे. इतने में ही बड़े जोर का शोर उठा और फिर इतने जोर का धमाका हुआ कि उन सबने अपने कानों में उंगलियां ठूंस लीं.

जहाज के टुकड़े टुकड़े हो गए और उस धमाके के जोर से जहाज के टुकड़े और कुछ चीजें इधर-उधर उड़ कर दूर दूर जा गिरीं.

कुछ क्षण बाद उन्होंने धीरे से सिर उठा कर जहाज की ओर देखा. वह सूखी लकड़ी की तरह जल रहा था और उसमें से आग के बड़े बड़े शोले उठ कर आकाश की ओर लपक रहे थे.

कुछ देर तक वे जहाज को जलते देखते रहे. फिर राजू ने कहा, "मेरे खयाल में अब और कोई डर की बात नहीं. अब हमें चल कर किसी गांव या बस्ती की तलाश करनी चाहिए ताकि सबका बचाव हो सके."

कृपाल बोला, "वह सब तो ठीक है, लेकिन इस बेहोश बच्चे का क्या करें? और दूसरे छोटे बच्चे भी तो रो रहे हैं."

राजू ने मंजू की आंखों में भी आंसू देखे, तो उसकी पीठ थपथपाते हुए बोला, "वाह, री मंजू . . . मैं तो तुम्हें बड़ी बहादुर लड़की समझता था. तुमको चाहिए कि सब बच्चों के आंसू पोंछो, प्यार से उन्हें दिलासा दो, यह नहीं कि खुद ही रोने बैठ जाओ."

मंजू बड़ी सयानी लड़की थी. वह भैया की बात समझ गई और उसने अपनी आंखें पोंछ डालीं. फिर वह नन्हे बच्चों को संभालने लगी. उन्हें पुचकार पुचकार कर तसल्ली देने लगी. राजू ने यह देखा, तो उसके मन को खुशी हुई. मंजू बोली, "राजू भैया, देखो तो बच्चे मिट्टी से लथपथ होकर गंदे दिख रहे हैं. अगर पानी होता, तो मैं इनके हाथ-मुंह धो देती."

"हां, तुम ठीक कहती हो. मैं अभी जा कर पानी की तलाश करता हूं. यह पहाड़ी जगह है. जरूर यहां कोई न कोई छोटा-मोटा झरना होगा."

यह कह कर राजू वहां से चलने लगा, तो कृपाल भी उसके साथ हो लिया. वे दोनों आधा घंटे तक इधर-उधर घूमते रहे, तो उन्हें बड़ी मुश्किल से एक जगह पहाड़ की दरार में से पानी की एक पतली-सी धारा बहती दिखाई दी.

पानी ले जाने के लिए उनके पास कोई बर्तन आदि था नहीं, इसलिए वह वापस लौटे और अपने सभी साथियों को वहां ल आए. मंजू ने सब बच्चों को बारी बारी अपने पास बैठा कर उनके मुंह धोए और फिर बोली, "अब इनके खाने-पीने के लिए कुछ प्रबंध हो जाता, तो अच्छा था, शायद इनके मन को कुछ शांति मिलती."

राजू को यह देख कर खुशी भी हुई और आश्चर्य भी कि मंजू अब बिल्कुल ऐसी लग रही थी, जैसे बड़ी-बूढ़ी सयानी औरत हो. उसने मंजू की बात का उत्तर देते हुए कहा, "अब हमें किसी गांव की तलाश करनी होगी ताकि खाने-पीने का कुछ प्रबंध हो सके."

इतने में लतीफ बोल उठा, "वह तो सब होता रहेगा, पर उससे पहले हम सब थोड़ी थोड़ी चाय पी सकते हैं. गरम गरम चाय से हम ताजा दम हो जाएंगे."

कृपाल ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा, "गरम गरम चाय! लेकिन, भैया लतीफ, यहां गरम गरम चाय आएगी कहां से?"

लतीफ ने मुस्करा कर अपने गले से लटके हुए थर्मस को थपथपाते हुए कहा, "इसमें गरम चाय भरी है, जो हम सबके लिए इस समय के लिए काफी होगी."

यह सुन कर कृपालसिंह यों उछलने लगा जैसे पंजाबी जाट भांगड़ा नाच नाचते समय उछलने लगते हैं. और जोर जोर से कहने लगा, "वाह रे, लतीफ भाई, तुम तो बड़े उस्ताद निकले! अच्छा लाओ, तो अपनी गरम गरम चाय. क्योंकि भले काम में देर नहीं होनी चाहिए." यह सुन कर सब हंसने लगे.

तब लतीफ ने अपने थर्मस का गिलास निकाला और सबसे पहले बच्चों को चाय पिलाई गई.

सबने चाय पी, लेकिन मंजू ने नहीं पी. बोली, "मेरा चाय पीने को मन नहीं हो रहा है."

चाय पी लेने और कुछ देर सुस्ता लेने के बाद राजू ने कहा, "आओ, भई कृपाल . . . मेरा मतलब है, पाल, जरा एक लंबा-सा चक्कर लगाएं, शायद कोई गांव दिखाई पड़े."

पाल और राजू वहां से चलने लगे, तो मंजू बोली, "भैया राजू, जरा संभल कर और देख-भाल कर जाना. यह तो बड़ा घना जंगल है. यहां पर कई भयंकर जानवर भी होंगे."

राजू ने अपनी खुखरी की मूठ पर हाथ रखते हुए कहा, "अरी मंजू, घबराती क्यों हो? खुखरी मेरे पास है, अगर शेर भी सामने आ गया, तो इसे उसके पेट में भोंक दूंगा . . . और फिर अपना मित्र पाल भी तो है!"

मंजू ने कृपाल के खाली हाथों की तरफ देखते हुए कहा, "लेकिन पाल भैया के पास तो कोई हथियार नहीं है."

राजू ने फौरन खुखरी बाहर खींच कर कहा, "अरे, मैं अभी पाल को एक डंडा काट कर देता हूं. देखो तो यहां कैसे कैसे मजबूत पेड़ों के झुंड हैं."

थोड़ी ही देर में राजू ने कृपाल के लिए एक डंडा काट कर दे दिया. उसे अपने मित्र के हाथ में थमाते हुए उसने चलने से पहले पूछा," क्यों, भई, क्या बजा होगा? घड़ी है किसी के पास?"

उन्हीं की उम्र का एक और लड़का था जिसका नाम राजेंद्र था, उसकी कलाई पर घड़ी बंधी थी. उसने घड़ी देखते हुए कहा, "इस समय साढ़े दस बजे हैं."

"बस तो हम डेढ़-दो घंटे में वापस आ जाएंगे," राजू ने कहा.

मंजू फिर बोली, "लेकिन यह बच्चा तो अभी तक बेहोश है?"

"फिक्र मत करो, मैंने अच्छी तरह देख लिया है, इसकी कोई हड्डी-वड्डी नहीं टूटी. यह केवल घुएं और घबराहट के कारण बेहोश हो गया है. इसके चेहरे पर ठंडा पानी छिड़कते रहो. कुछ देर ताजी हवा खाएगा, तो होश में आ जाएगा. फिर इस के हिस्से की चाय पिला देना."

यह कह कर राजू पाल के साथ वहां से चल निकला. जब तक वह जाता दिखाई देता रहा, मंजू की नजरें अपने भैया का पीछा करती रहीं. लेकिन जब वह आंखों से ओझल हो गया, तो उसका दिल बोझिल होने लगा. फिर भी उसने अपने आपको संभाल रखा और मन ही मन भगवान से प्रार्थना करने लगी कि उसका भैया जल्दी से जल्दी बिल्कुल सुरक्षित वापस आ जाए. (क्रमशः)

कहानी

kissekahani.com

हाथियों से बदला

मोतीचूर के घने और विस्तृत जंगल में हाथियों का ही एकच्छत्र राज्य है. झुंड के झुंड बनाए जिधर यह राज-परिवार पृथ्वी को अपनी धमक से दहलाता निकल जाता है, उधर ही प्रलय आई जान पड़ती है. बड़े से बड़े जानवर खड़े खड़े कांपने लगते हैं, चीते और बाघ दुम दबा कर भाग खड़े होते हैं और पेड़ों पर बैठे बंदर और लंगूर डर के मारे अंगूर की तरह नीचे टपक पड़ते हैं.

इसी जंगल में खरगोशों की भी एक छोटी-सी बस्ती है. एक दिन पेड़ों को जड़ों से तिनकों की तरह उखाड़ती, तड़ाक-फड़ाक हाथियों की सेना धूम-धड़ाका करती इसी बस्ती की ओर चली आई. पूरी पृथ्वी कांप उठी. खरगोशों की जानें सूख गईं. कुछ खरगोश सिर पर पांव रख कर भागे, कुछ जान हथेली पर लेकर भागे. और जो न भाग पाए, वे वहीं जमीन के नीचे अपने बिलों में जा कर दुबक गए. मगर नन्हा खरगोश बाहर ही रह गया. वह न इधर भागा पाया न उधर. हाथियों का लश्कर इतने नजदीक आ गया जान पड़ता था कि अब उसे वहीं कहीं छिपे रहने में खैर दिखाई दी.

सहसा चिड़ियों ने चहचहाना बंद कर दिया. वे पेड़ों को छोड़ कर कहीं दूर उड़ गईं. चारों ओर एक अजीब-सा सन्नाटा फैल गया. और पेड़ों के टूटने की आवाजों के साथ साथ सैकड़ों तेज और भारी भारी धमक वाले कदम उसे अपनी ओर आते प्रतीत हुए. इस वक्त वह बिलकुल अकेला था. उसे कंपकंपी छूटने लगी. फिर कई एक हाथी, हथनियां और उनके दो-तीन बच्चे उसे पेड़ों से टकराते नजर आए. धीरे धीरे ये आवाजें उसकी चारों ओर फैल गईं. उसे लगा, वह हाथियों से घिर गया है और किसी भी वक्त कोई भारी-भरकम पांव उसे मिट्टी के बराबर कर सकता है. पांवों की धमक और बढ़ी और कई एक हाथी चिंघाड़ते हुए उसके सामने से निकल गए. फिर और, फिर और. गिनती कर पाना मुश्किल हो गया. उसे अपनी चारों ओर

—वीरकुमार अधीर

हाथी ही हाथी नजर आने लगे.

एकाएक तीन-चार हाथियों और हथनियों के बीच एक नन्हा-मुन्ना छोटा हाथी उसे नजर आया, जो धीरे धीरे घिसट घिसट कर चल रहा था. इतने भय और शोर-शराबे में भी उस नन्हे हाथी को देख कर उसे हल्की-सी खुशी हुई. वह सब कुछ भूल कर उसे देखता रहा. उसे पता ही न चला कि हाथियों का दल कब उसके सामने से गुजर गया. तब तक चारों ओर पंछी चहकने लगे थे. उसने देखा, अब खतरा दूर जा चुका है. वह अपने स्थान से फुदक कर बाहर निकल आया.

खरगोशों की इस छोटी-सी बस्ती पर दो-तीन दिनों से ही यह बला आनी शुरू हुई थी. दरअसल इस वक्त हाथी नदी की ओर स्नान के लिए जाते थे. पहले वे दूसरे रास्ते से जाया करते थे, मगर दो-तीन दिन से न जाने उनके दिमाग में क्या धुन समाई कि इधर का ही रास्ता पकड़ लिया. और बगैर किसी पूर्व सूचना के, एकाएक ही हबड़-धबड़ में इस प्रकार आ धमकते कि कई एक खरगोशों को तो जान बचानी मुश्किल हो जाती. भागने तक का अवसर नहीं मिलता.

अब तक कई खरगोश इन सूंड़ों वाले नशेबाजों की कृपा से ईश्वर को प्यारे हो चुके थे. मगर इन जालिमों को इससे क्या! पंखे की तरह कान हिलाते हुए चीखते-चिंघाड़ते ऐसे आ धमकते हैं, जैसे सारे संसार में एकमात्र इन्हीं का राज्य हो. खैर, संसार में न सही, इस जंगल में तो है ही इनका राज्य! ऐसी हालत में बेचारे खरगोशों की क्या बिसात कि अपनी बस्ती को रौंद कर चलने वाले इन अक्खड़ों को कोई चुनौती दें या इनकी मस्ती में कोई खलल डालें.

कुछ ही देर में रोने-धोने की आवाजें बिलों के अंदर से आनी आरंभ हुई और बात की बात में पूरी बस्ती में शोक का वातारण छा गया. खबर उड़ी, तो पता चला कि हाथियों की इस हबड़ा-धबड़ी में तीन जानें

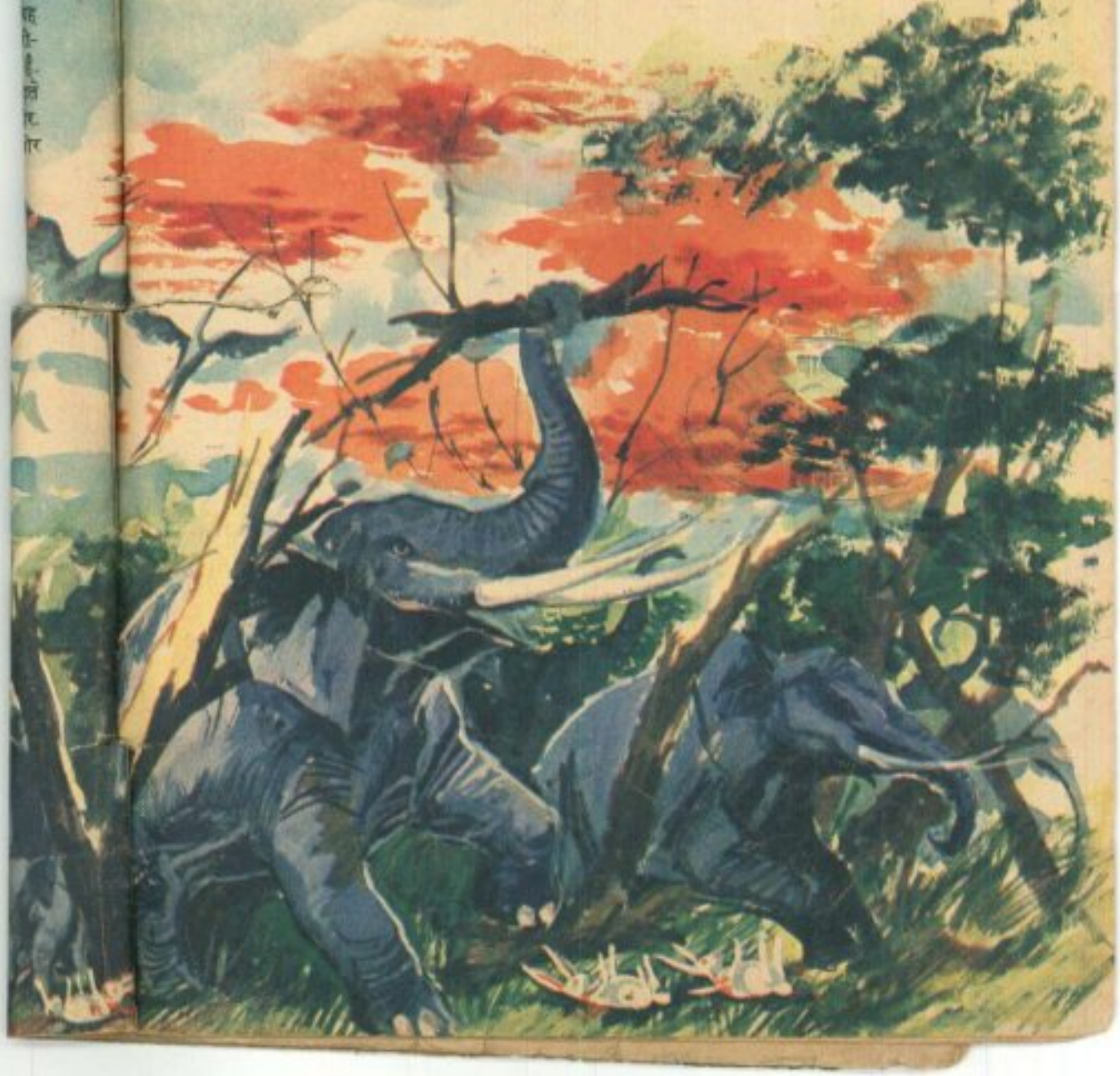

और स्वर्ग सिधार गई. कुछ ही क्षणों में उनके सगे-संबंधियों की चीख-पुकारों में पूरी बस्ती डूब गई. उस रात एक भी खरगोश न सोया. रात भर फुदक फुदक कर कुछ खरगोश तो बिलों से बाहर निकल कर एक-दूसरे की खैर-खबर लेते रहे, मगर कुछ खरगोश इतना अधिक डर गए थे कि वे अपने अपने बिलों में ही दुबके रहे, बाहर ही न निकले. आखिर नन्हे खरगोश से न रहा गया. वह फुदकता हुआ मुखिया के पास पहुंचा और दुआ-सलाम के बाद बोला, "बड़े जी, छोटे मुंह बड़ी बात न हो, तो एक निवेदन करूं?"

"कहो, बेटे," बड़े खरगोश ने दर्द भरे स्वर में उसकी पीठ पर जीभ फेरने के बाद पूछा.

नन्हा खरगोश बोला, "आखिर हम लोग कब तक यों ही हाथियों के अत्याचार सहते रहेंगे?".

बूढ़े खरगोश ने जवाब दिया, "मगर हम कर ही क्या सकते हैं, बेटे?"

इस बातचीत को सुन कर कुछ और खरगोश इनके नजदीक को खिसक आए और थोड़ी देर में एक अच्छी खासी सभा होने लगी. उनमें से एक ने निराशाजनक स्वर में कहा, "अब तो बस्ती कहीं और बसानी पड़ेगी."

तीसरा खरगोश तपाक से बोला, "और अगर वहां भी इन हाथियों ने आतंक फैलाया, तो तीसरी जगह ढूंढते फिरेंगे!"

हमारी पसंद
प्रतियोगिता नं. १६ का परिणाम

हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. १६ के अंतर्गत 'पराग' के अप्रैल अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. सर्वशुद्ध हल किसी भी प्रतियोगी का नहीं निकला. जिस एक प्रतियोगी की पसंद का क्रम श्रेष्ठ कहानियों के बहुमत से अधिकतम मेल खाता हुआ निकला उसका नाम और पता इस प्रकार है :

अशोककुमार यादव, द्वारा श्री छोटेलाल यादव, यादव घी स्टोर्स, गन्ना वाली गली, अमीनाबाद, लखनऊ (उ. प्र.).

सही हल वाली कहानियों का क्रम इस प्रकार है :—

१—शरारत ही शरारत २—गंजे खलवाट ३—एक थी संदूकची ४—डेडलाक ५—हाथियों का बंटवारा ६—मिट्टी के मास्टर साहब ७—पानी की लड़की ८—बांसुरी की धुन पर ९—किस्सा एक दियासलाई का १०—नौकर की करतूत.

"नहीं तो क्या हाथियों से युद्ध करेंगे?" एक ने व्यंग्यात्मक स्वर में पहले की बात काटी.

"हां, जरूरत पड़ी तो करना ही पड़ेगा!" नन्हे खरगोश ने जोश के साथ यह बात इस प्रकार कही कि शोक का वातावरण होते हुए भी सब खरगोश हंस पड़े.

नन्हा खरगोश खिसिया कर खामोश हो गया.

कुछ सोच कर बूढ़े मुखिया खरगोश ने कहा, "हम अपना दूत हाथियों के राजा के पास भेज कर उनसे प्रार्थना करेंगे कि वह कृपा कर इस रास्ते से आना-जाना बंद करके अपने पुराने रास्ते को ही आवागमन के लिए चुन लें."

"हां, यही ठीक है," सबने एक साथ कहा.

अगले ही दिन खरगोशों का दल हाथियों की खास बस्ती में जा पहुंचा. दिन का वक्त था. भोजन आदि के बाद थक-थका कर अलसाए-से हाथी राजा बैठे हुए जमुहाइयां ले रहे थे और उनके इर्द-गिर्द कई एक और हाथी पसरे हुए थे. खरगोश फुदकता हुआ उनकी ओर चला. हाथियों के राजा की नजर जब इस फुदकते प्राणी पर पड़ी, तो एकदम आग बबूला हो उठे और गरज कर बोले, "यह कौन बदतमीज प्राणी है जो गणेशजी के खास वंशज हाथियों के महाराजाधिराज की शान के खिलाफ दरबार में यों फुदकते हुए घुसा चला आ रहा है?"

खरगोशों का दूत यह गर्जना सुन कर पहले तो डरा, मगर फिर साहस बटोर कर बोला, "हुजूर, यह आपकी प्रजा का एक मासूम प्राणी खरगोश है. मेरे फुदकने से आपकी शान के खिलाफ कोई गलती हो गई हो, तो छोटा-मोटा प्राणी समझ कर माफ करें."

"जाओ, माफ किया!" महाराजाधिराज गरजे, "कहो, कैसे आना हुआ?"

"मैं खरगोशों की बस्ती से आया हूं और एक प्रार्थना आपकी सेवा में ले कर उपस्थित हुआ हूं, महाराज."

"बको!"

"हुजूर, आप अपने लाव-लश्कर के साथ जब यदा-कदा टहलने निकलते हैं..."

"तो?" आंखें फाड़ कर महाराजाधिराज हुंकारे.

"तो, हुजूर, कई एक खरगोश मर-मरा जाते हैं."

"तो हम क्या करें?"

"तो, हुजूर, मेहरबानी करके अगर आप उस खरगोशों की बस्ती वाले रास्ते से टहलने जाने के बजाए किसी और रास्ते से टहलने जाया करें, तो हम खरगोशों के प्राण बच जाएं."

"क्या मतलब?" महाराज ने गरज कर कहा, "क्या हम तुम सफेद चूहों के डर से अपना रास्ता बदल दें?"

"नहीं, हुजूर, निवेदन सिर्फ यह है कि आपके राज्य में जीने का हक तो सभी को मिलना चाहिए."

"यह नहीं हो सकता. हम अपना रास्ता नहीं बदल सकते. तुम अपनी बस्ती कहीं और बसा लो. समझे?"

" एक ने

ा!" नन्हे
र कही कि
ा हंस पड़े.
ा गया.
कहा, "हम
उनसे प्रार्थना
ा बंद करके
ए चुन लें."
हा.
ाओं की खास
जन आदि के
राजा बैठे हुए
कई एक और
ा उनकी ओर
फुदकते प्राणी
और गरज कर
णेशजी के खास
ान के खिलाफ
रहा है?"
न कर पहले तो
ोला, "हुजूर, यह
खरगोश है. मेरे
कोई गलती हो
माफ करें."
राजाधिराज गरजे,
हूं और एक प्रार्थना
ा हूं, महाराज."
रकर के साथ जब
राजाधिराज हुंकारे,
मर-मरा जाते हैं."
अगर आप उस खर-
टहलने जाने के बजाए
या करें, तो हम खर-
गरज कर कहा, "क्या
ना रास्ता बदल दें?"
यह है कि आपके राज्य
मिलना चाहिए."
अपना रास्ता नहीं बदल
और बसा लो. समझे?"

हां, लालाजी, यह आम दशहरी कहलाता;
लखनऊ शहर से है इसका सीधा नाता.

जी, यह बनारसी लंगड़ा है,
सारे आमों में तगड़ा है.

ये आम चूसने वाले बड़े रसीले हैं,
कुछ हल्के सिंदूरी, कुछ गहरे पीले हैं.

ये पटना से मंगवाए हैं,
ये गोरखपुर से आए हैं.

क्या जिक्र करूं मैं चौंसा या कि सरौली का,
मालदा, अजी, इसके आगे लगता फीका!

सीपिया, सफेदा भी मैं बेचा करता हूं,
वैसे तो तोतापुरी आम भी रखता हूं,

है आम पायरी भी मीठा, सस्ता, ताजा,
पर बंबइया हापुस सब आमों का राजा!

गोला पसंद है, ले जाओ,
बीवी-बच्चों को बहलाओ.

मैं कहता हूं यदि देर लगाओगे, लाला,
मौसम कुछ दिन का है, पछताओगे, लाला!

बस अर्ज यही है जब जी चाहे तब आना,
पर आम समझ कर व्यर्थ न मेरा सिर खाना!

—किशोरीरमण टंडन

—सतीशचंद्र टंडन

कला की पहली किरण

उसे दाँतों की सही देखभाल करना सिखाइये – फ़ोरहन्स

आपकी नन्हीं बच्ची अपनी ही जैसी सुंदर 'रंगोली' सजाती है। केवल आप इस बात का निश्चित प्रबंध कर सकते हैं कि वह सदा ऐसी ही प्यारी बनी रहे – उसकी मुस्कान सदा ऐसी ही आकर्षक रहे। उसे अभी से बता दीजिये कि फ़ोरहन्स से दाँतों की देखभाल करने से उसके दाँत हमेशा मोतियों की तरह चमकदार और उसके मसूड़े स्वस्थ और मज़बूत रहेंगे। □ दाँतों के डाक्टर के बनाये हुए फ़ोरहन्स में मसूड़ों को मज़बूत रखनेवाले विशेष तत्त्व होते हैं। वह दंत-क्षय और मसूड़ों की तकलीफ़ों को रोकने में सहायता देता है। वह आपके लिए भी अच्छा है और आपके बच्चे के लिए भी। इसलिए उसे नियमित रूप से – रोज़ रात को और सुबह – फ़ोरहन्स टुथपेस्ट से दाँत साफ़ करना सिखाइये... जीवन भर दाँतों को ठीक रखने के लिए।

फ़ोरहन्स से दाँतों की देखभाल जितनी जल्दी सिखा दें उतना ही अच्छा है।

"दाँतों और मसूड़ों की रक्षा" नामक रंगीन सचित्र पुस्तिका

१० भाषाओं† में प्राप्त है। डाक खर्च के लिए निम्न पते पर १० पैसे का टिकट भेजिए:–
३- मैसर्स डेण्टल एडवायज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१ P-10

का नाम _____

७—हा _____

९—जिस भाषामें चाहिये उस के नीचे कृपया लकीर खींच दीजिये : हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलुगु, मलयालम या कन्नड़ ।

की करता के बच्चे के हित के लिए शायद यह पुस्तिका सबसे ज्यादा ज़रूरी हो सकती है!

फ़ोरहन्स

टुथपेस्ट–एक
दंत चिकित्सक द्वारा निर्मित

सिखाइये—फ़ोरहन्स

फ़ोरहन्स

टुथपेस्ट—एक
त चिकित्सक द्वारा निर्मित

आदमी का चेहरा

(पृष्ठ ३५ से आगे)

नाक वाले लोग जीवन में सफलता पाते हैं. चित्र ८ जैसी नाक वाले लोग काम करने का दिखावा करते हैं.

जिन लोगों का चित्र ९ के समान नाक वाला चेहरा होता है वे पागल, बुद्धू या मूर्ख होते हैं. चित्र १० और ११ जैसे चेहरे वाले लोगों के चाहने वाले बहुत होते हैं. यद्यपि चित्र १० और ११ जैसे चेहरे वाले लोग नेता होते हैं पर चित्र १० जैसे लोग ऊंचे स्थान पर जा पहुंचते हैं. जिन लोगों का चित्र ११ के समान नाक वाला चेहरा होता है, उनका दिमाग बहुत तेज होता है और वे अपने जीवन में आने वाली परेशानियों का साहस के साथ सामना करते हैं. ऐसे आदमी अपनी दिमागी ताकत और सुदृढ़ चरित्र के कारण ही नेता बनते हैं. चित्र १० के समान लोग थोड़े-बहुत पाखंडी भी हो सकते हैं. इनमें चित्र ७ और ८ के भी थोड़े-से लक्षण होते हैं. श्रेष्ठ महात्मा चित्र ११ के समान नाक वाले जैसे होते हैं. जब कि चित्र १० वाले केवल दिखावे के लिए धर्म या समाज के नेता बन जाते हैं. दोनों के पास दिमाग अच्छा होता है, पर वे उसका उपयोग अलग-अलग ढंग से करते हैं.

अब चित्र, १८ और १९ को देखो. इस तरह के लोगों में चित्र २०, २१, २२ के लोगों के समान कुछ गुण होते हैं. पर इसके अलावा वे चालाक होते हैं और बातें बड़ी मीठी मीठी करते हैं. जिन लोगों के चित्र १५ के समान चेहरे होते हैं, वे गेहुंती होते हैं.

चित्र १२, १३, १४ जैसे लोगों में कुछ बातें चित्र ६ और ७ जैसी होती हैं. इस तरह के लोग दूसरों के कामों में बिना वजह दखल देने के आदी होते हैं. वे लोग यद्यपि चालाक होते हैं पर बातें ऐसी करते हैं जिनको सुन कर उनकी बेवकूफी पर हंसी आती है.

केवल चित्र १२ जैसे लोग गंभीर होते हैं, जिन लोगों का चित्र १६ के समान चेहरा होता है, उनमें बहुत-सी बातें चित्र ७ और १३ के समान चेहरे वालों जैसी होती हैं. इस तरह के लोगों के जीवन में स्वार्थ की मात्रा बहुत ज्यादा रहती है.

अब देखो चित्र १७. इस तरह के लोग बड़े निर्दयी व कठोर होते हैं उनमें आगे की बातें सोचने की ताकत बहुत कम होती है. ऐसे लोग शरीर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं. वे परिणाम की परवाह किये बिना चाहे जिस काम को करने के लिए तैयार हो जाते हैं. वे दिमाग के कमजोर तथा अनेक दुर्गुणों के शिकार होते हैं.

(अनुवाद : हीरा जैन)

बालागंज, मंदसौर (म. प्र.)

(पाठक इस लेख को केवल जानकारी और मनोरंजन के लिए ही पढ़ें. अपने किसी परिचित पर इन धारणाओं को आजमाने की कोशिश न करें, अन्यथा इसके बड़े खतरनाक परिणाम भी हो सकते हैं ! —संपादक)

लल्लन और टिल्लन

"अजी, मियां, तुम रोजाना तो हवाई हांकते थे, आज यह चुप्पी कैसी? आखिर माजरा क्या है?" मियां टिल्लन ने मियां लल्लन से पूछा.

"अमां, क्या बताऊं! अभी अभी न मालूम कहां से मंडराती हुई एक बात मेरी खोपड़ी में आ गई!" मियां लल्लन ने औंधी बटलोई-सरीखा अपना सिर खुजाते हुए कहा— "बस, उसी के साथ खोपड़-मंजन कर रहा हूं!"

"मियां, कौन-सी बात?" मियां टिल्लन ने पूछा.

"यार, मैं सोच रहा था, कि जब मैं अल्लाह का प्यारा हो जाऊंगा, तो मेरा क्या होगा?"

"बस, इतनी छोटी-सी बात! मैं इसका जवाब तो चुटकी बजाते दे सकता हूं!"

"बेपर की उड़ा रहे हो या वाकई?"

"तो सुनो, मियां, तुम्हारे दम तोड़ने के बाद मुझे बेहद सदमा पहुंचेगा, और फिर तुम्हारा जनाजा बड़ी शान-शौकत के साथ उठेगा."

"अमां, यह बात तो मुझे मालूम है. खैर, फिर क्या होगा?"

"फिर? फिर तुम्हें कब्र में दफना दिया जाएगा."

"अमां, यह बात भी मुझे मालूम है! खैर, फिर?"

"फिर तुम्हारी कब्र में मिट्टी डाली जाएगी."

"ठीक है, फिर क्या होगा?"

"फिर होगा क्या?" मियां टिल्लन ने कहा, "तुम्हारी कब्र अच्छी तरह से ढक कर उस पर चूने की सफेदी कर दी जाएगी."

"अमां, यह भी ठीक, लेकिन आगे क्या होगा?"

"फिर एक दिन मूसलधार वर्षा होगी, और तब तुम्हारी कब्र ढह जाएगी और तब उसका नामोनिशान भी नहीं रह जाएगा!"

"अरे, यह बात भी मुझे अच्छी तरह मालूम है! खैर, फिर क्या होगा?"

"इसके बाद जहां तुम्हारी कब्र होगी, वहां हरी, मुलायम घास उग आएगी. समझे, मियां?"

"समझा, लेकिन फिर क्या होगा?"

"फिर क्या होगा, पूछो मत! पड़ोसियों की बकरियां आ कर वह हरी मुलायम घास चर जाया करेंगी!"

"क्या कहा, मियां? पड़ोसियों की बकरियां मेरी कब्र की हरी, मुलायम घास चर जाया करेंगी! रुको, मैं अभी एक एक से निपट कर आता हूं. उन्होंने मुझे समझ क्या रखा है? मैं कोई ऐरा-गैरा नत्थू खैरा थोड़े ही हूं. पड़ोसियों की ऐसी-तैसी . . ."

और बात पूरी करते न करते मियां लल्लन लाठी ले कर पड़ोसियों के घर की ओर लपके.

—सतीशचंद्र टंडन

लोमड़ी ने अपनी मांद के बाहर कदम रखा, फिर झट वापस लौट पड़ी.

बाहर कड़ाके की ठंड पड़ रही थी. वह मांद के एक कोने में जाकर ऊकड़ बैठ गई. लेकिन इस तरह वहां कब तक बैठी रहती? कल से वह भूखी थी और अगर कहीं वह अब भी भोजन की तलाश में नहीं निकली, तो संभव है कि उसे आज भी खाली पेट रहना पड़े. उसने फिर एक बार अपने बिखरे हुए साहस को बटोरा और मांद के द्वार तक पहुंच गई. बर्फीली हवा का एक ठंडा तीखा झोंका उसके शरीर से टकराया और उसे लगा जैसे सिर से लेकर पूंछ तक की उसकी एक एक नस बीच बीच में से टूट गई है.

वह कुछ देर तक उसी स्थान पर खड़ी सोचती रही, फिर मांद से बाहर निकल आई. दूर दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था. सारे जानवर अपने अपने घरों में दुबके पड़े थे. हवा के तेज थपेड़ों से लोमड़ी को लग रहा था कि उसके कान के परदे अब फटे अब फटे. एकाएक तभी उसकी नाक को एक जोरदार झटका लगा. उसके नथुने फूलने-पिचकने लगे. उन तक उसके खाने योग्य पदार्थ की गंध पहुंच गई थी.

वह उसी दिशा की ओर बढ़ने लगी जिधर से उसे भोजन मिल सकने का आभास मिला था. कुछ दूर आगे जा कर उसे ठिठकना पड़ गया. थोड़ी ही दूर पर आठ-दस खरगोश एक छोटे-से टीले पर बैठे हुए थे. उसे बड़ा आश्चर्य हुआ—भला इतनी कड़ाके की ठंड में इन खरगोशों का यहां क्या काम! लेकिन उसे कारण समझते देर नहीं लगी. उन्हीं खरगोशों के समीप एक छोटा-सा खरगोश मरा हुआ पड़ा था. लोमड़ी समझ गई कि ये सब खरगोश उसे यहां दफनाने के लिए आए हुए हैं. लोमड़ी ने देर नहीं की. वह बिजली की तेजी से उन खरगोशों की ओर लपकी.

खरगोशों ने अपनी ओर भागी आ रही लोमड़ी

एक वीर का—

अंतिम संस्कार

kissekahani.com

को देख लिया. वे सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए और अपने अपने बिलों में जा छिपे. पर इस भाग-दौड़ में वे अपने मृत साथी के शरीर को अपने साथ ले जाने में सफल न हो सके.

अंधे को क्या चाहिए? दो आंखें. लोमड़ी की भूख मिटाने के लिए यह मरा खरगोश ही काफी था. वह पागलों की तरह उस पर झपटी और उसे मुंह में दबोच कर अपनी मांद की ओर लौट पड़ी.

लोमड़ी जब दूर निकल गई, तो खरगोश अपने अपने बिलों से बाहर निकल कर फिर उसी स्थान पर इकट्ठे हो गए. उनके चेहरों पर छाई उदासी और गहन हो उठी और आंखों में पानी छलक आया. कुछ देर तक वहां कब्रिस्तान का-सा सन्नाटा छाया रहा. फिर उस सन्नाटे को तोड़ते हुए एक खरगोश बोला—"यह बहुत बुरा हुआ. अब वह लोमड़ी उसे निर्दयता से फाड़ कर खा जाएगी."

"हम संख्या में अधिक होते हुए भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके," एक अन्य खरगोश ने कहा, "यदि हम उस वीर का अंतिम संस्कार भी अपनी शांति-प्रिय मर्यादा के साथ न कर सके,

तो हम पर धिक्कार

"लेकिन हम उ
तीसरे खरगोश ने
मौत के मुंह में झों

पहले वाला ख
अब हमें हाथ पर
चाहिए. जैसे भी हो

सब मिल कर
शरीर को दोबारा
पर उन्हें कोई उपा
आशा की एक क्षी
मित्र कौवा तेजी से
पहुंच कर रुका औ
इतने सबेरे तुम यह
बड़े उदास दिखाई

तब एक ख
हमारा एक साथी
बचाने के लिए उन्हे
एक भेड़िए के उ
वह रात भर दुब
की ओर गिरता-
बीच में पहुंचते
वीर गति पाई. ह
यहां लाए थे. त
टूट पड़ी और हम

"अब हम अ
के विषय में सोच

"हुं!" को
फिर बोला, "तुम
से तुम्हारे साथी
सकते हो कि वह

तो हम पर धिक्कार है!"

"लेकिन हम उसे रोक भी कैसे सकते थे?" एक तीसरे खरगोश ने कहा— "उसे रोकना अपने को स्वयं मौत के मुंह में झोंकना था."

पहले वाला खरगोश बोला—"जो हुआ सो हुआ, अब हमें हाथ पर हाथ धरे व्यर्थ में समय नहीं खोना चाहिए. जैसे भी हो, उपाय खोजना चाहिए."

सब मिल कर लोमड़ी के मुंह में दबे अपने साथी के शरीर को दोबारा प्राप्त करने का उपाय सोचने लगे. पर उन्हें कोई उपाय नहीं सूझा. तभी उन्हें निराशा में आशा की एक क्षीण किरण दिखाई दी. उनका परम मित्र कौवा तेजी से उड़ता हुआ उन्हीं की ओर चला आ रहा था. सब उसी ओर देखने लगे. कौवा उन्हीं के पास पहुंच कर रुका और उनसे बोला, "भाई लोगो, आज इतने सवेरे तुम यहां क्या कर रहे हो? अरे, तुम लोग तो बड़े उदास दिखाई दे रहे हो! आखिर बात क्या है?"

तब एक खरगोश ने उत्तर देते हुए कहा—"भाई, हमारा एक साथी हमारे पूरे कबीले को भेड़ियों से बचाने के लिए उन्हें भुलावा दे कर दूर ले गया था. लेकिन एक भेड़िए के उचटते हुए पंजे ने उसे जख्मी कर दिया. वह रात भर दुबका रहा. सुबह होते ही वह कबीले की ओर गिरता-पड़ता चल पड़ा. लेकिन हम लोगों के बीच में पहुंचते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए. उसने वीर गति पाई. हम उसे सम्मान सहित दफनाने के लिए यहां लाए थे. तभी न जाने कहां से हम पर एक लोमड़ी टूट पड़ी और हमारे उस साथी को छीन ले गई.

"अब हम अपने साथी के मृत शरीर को वापस लाने के विषय में सोच रहे हैं. काश, हम उसे पुनः पा सकते!"

"हूं!" कौवा एकदम किसी सोच में पड़ गया. फिर बोला, "तुम लोग घबराओ नहीं. मैं अभी लोमड़ी से तुम्हारे साथी को वापस लाता हूं. क्या तुम बता सकते हो कि वह लोमड़ी किस ओर गई है?"

खरगोशों ने उसे वह दिशा बता दी. कौवे ने तुरंत पंख फड़फड़ाए और खरगोशों द्वारा बताई दिशा की ओर तेजी से उड़ चला.

कुछ दूर जा कर उसे वह लोमड़ी दिखाई दे गई. उसके मुंह में अब भी वह खरगोश दबा था और वह तेज चाल से अपनी मांद की ओर बढ़ी जा रही थी. कौवा उसी राह पर लगे एक पेड़ पर जा बैठा. जैसे ही लोमड़ी उस पेड़ के पास से गुजरने लगी, वह उसे पुकार कर बोला, "लोमड़ी बहन!... क्या तुम मेरी एक बात सुनना पसंद करोगी?"

लोमड़ी ने सिर उठा कर पेड़ पर बैठे कौवे की ओर देखा, फिर उपेक्षा भरे भाव से बोली, "क्या कहना चाहते हो तुम? जो कुछ कहना है शीघ्र कहो. मैं व्यर्थ

• निखिल चंद्र जोशी

रुकना पसंद नहीं करूंगी." उसने छोटे-से खरगोश को मुंह से निकाल कर सावधानी से अपने दोनों अगले पैरों के बीच में दबा लिया था.

कौवा एक डाल नीचे उतर आया, फिर बोला, "यह तुम कौन-सा जानवर मुंह में दबाए हुए थी? कहीं यह खरगोश तो नहीं है?"

"हां है. लेकिन तुमको इससे क्या मतलब?" लोमड़ी नाक-भौं सिकोड़ते हुए बोली.

"और जहां तक मैं समझता हूं, यह पहले से मरा हुआ था और तुम इसे खरगोशों के बीच से उठा कर लाई हो?"

दि यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया
प्रस्तुत करता है :

जाली चैक का रहस्य

"जो भी हो, तुम कौन हो इन सब बातों के पूछने वाले?" लोमड़ी बिगड़ उठी. उसे कौवे की बेकार बातों पर बड़ा क्रोध आया.

"नाराज क्यों होती हो, लोमड़ी बहन?" कौवा बड़े शांत स्वर में बोला, "मैं जो कुछ पूछ रहा हूं तुम्हारी भलाई के लिए ही पूछ रहा हूं. बात यह है कि अभी कुछ देर पहले मुझे कुछ खरगोश दिखाई दिए थे, जो कि अपने किसी मरे हुए साथी को दफनाने जा रहे थे. मेरे यह पूछने पर कि उसकी किस प्रकर मृत्यु हुई, उन्होंने बताया कि उसने कोई विषैली वस्तु खा ली थी जिसे खाते ही उसकी मृत्यु हो गई."

"लेकिन तुम्हारे यह सब बताने से भला मेरा क्या लाभ?" लोमड़ी उसकी बातों से उकता कर उस खरगोश को पुनः मुंह में दबोच कर चलने को तैयार होते हुए बोली.

कौवा उसकी बात सुन कर ठहाका मार कर हंस पड़ा और बोला, "अरे लोमड़ी बहन, जरा सोचो तो, उस खरगोश ने विषैली वस्तु खाई, तो यह तत्काल मर गया और अब तुम स्वयं इस खरगोश को खाने जा रही हो, तो क्या तुम जिंदा रह पाओगी?"

लोमड़ी ने झट खरगोश को जमीन पर रख दिया—"बाप रे बाप!" वह कांपती हुई आवाज में बोली, "तुम अगर इस समय नहीं आते, तो आज मेरे प्राण-पखेरू उड़ जाते. मैं तो अभी इसे खाने जा रही थी. भाई, मैं तुम्हारी हमेशा एहसानमंद रहूंगी."

"अरे, नहीं नहीं, बहन, इसमें एहसान की भला क्या बात. भाई अगर बहन के काम न आ सके, तो फिर यह रिश्ता ही कैसा?"

और फिर जैसे ही लोमड़ी उसे धन्यवाद देती हुई कुछ दूर पहुंची, कौवे ने चोंच से उस छोटे-से मृत खरगोश को कान से पकड़ा और उसे उठा कर अपने साथ ले उड़ा और जा कर शोक से व्याकुल खरगोशों को सौंप दिया. खरगोशों ने तुरंत गढ़ा खोदकर अपने साथी के शरीर को सम्मान के साथ दफना दिया और उसकी पवित्र याद में दो मिनिट मौन खड़े रह कर, आठ आठ आंसू रोए. फिर उन्होंने अपने मित्र सहृदय कौवे को बार बार धन्यवाद दिया और अपने वीर मृत साथी के अद्भुत पराक्रम की चर्चा करते हुए वापस लौट गए. ●

८ साउथ रोड, सिविल लाइन्स,
इलाहाबाद.

घोर अपमान (पृष्ठ १७ से आगे)

अब तुरंत गणेश के लिए कन्या की खोज हुई—कौन तैयार होता अपनी लड़की देने के लिए. लेकिन मार्ग में [illegible] एक राजा मान गया, पर बोला, "एक शर्त मेरी भी है, मेरी जो जुड़वा लड़कियां हैं दोनों के साथ विवाह करना होगा!" शिव मान गए. रिद्धि और सिद्धि के साथ गणेश का विवाह कर दिया गया.

बारात पहुंची विदर्भ देश. लोग दोनों बच्चों को देख देख कर हंसने और तालियां बजाने लगे. पर दोनों ने ही उनकी ओर ध्यान नहीं दिया. हंसने वालों को मजा तो चखाना ही चाहिए, दोनों ने मन ही मन विचार किया.

विवाह धूमधाम से हो गया—बारात जीमने के लिए बैठी. शनि और गणेश को मौका मिला. खाने बैठे, तो उठने का नाम ही नहीं लिया—उनके बाद की चार पंगतें भी जीम कर उठ गईं.

"भई, वह सफेद सफेद क्या है? वही दे दो एक डलिया भर. . ." गणेश बोलता.

"अर भई, नमकीन तो इधर आया ही नहीं. . ." शनि हर परोसने वाले से कहता.

कृष्ण के श्वसुर भीष्मक राजा भागे भागे जनवासे गए—"गजब हो गया, साहब. . .मेरी तो नाक ही कटने को है. . .ये बच्चे हैं या बला—खाने का सामान अब समाप्त होने को आ रहा है और वे हैं कि और खाने को मांग रहे हैं. . ."

"शायद उनको फिर किसी ने चिढ़ा दिया है. . ." शंकर ने कहा और गणेश और शनि के पास जा कर उनको पुचकारा —"अब उठो भी, बेटो, यों तो तुम्हारी हंसी और भी अधिक होगी. चलो, अब उठो."

"नहीं उठेंगे, यहां के लोग हमें देख कर हंसते हैं, वे माफी मांगें तब उठेंगे!" गणेश ने कहा.

"मैं मांगता हूं माफी, मेरे छोटे छोटे अतिथियो, हमें क्षमा करो. . .और सब लोगों से कह देता हूं कि वे सदैव सब देवताओं से पहले आप ही लोगों की पूजा किया करेंगे, नहीं तो उनकी पूजा सफल नहीं होगी. . .अब तो खुश हो ना?" राजा भीष्मक ने कहा.

"यदि गणेश की पूजा सबसे पहले हुई, तो मुझे बहुत खुशी होगी, क्योंकि उसी ने मेरा मान रखा," शनिचर ने गणेश की तरफ देखते हुए कहा.

और दोनों बालक चुपचाप उठ कर जनवासे चले गए.

कहते हैं तभी से किसी भी मांगलिक कार्य में सबसे पहले गणेश की ही पूजा होती है. यदि पहले गणेश की पूजा न की जाए, तो काम में विघ्न पड़ जाता है. ●

मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय,
२२७ कालबादेवी रोड,
बंबई–२

तितली और मधुमक्खी

तितली को अपने पंखों पर
रहता है अभिमान;
मधु पराग से मिल सकता है,
उसे नहीं है ज्ञान.

जब तक वह पंखों पर भूली
उड़ती चारों ओर,
मधुमक्खी बगिया में आकर
लेती शहद बटोर!

—श्रीप्रसाद

kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से [illegible]

सिर मुंड़ाते ओले पड़े

बुद्धूमल को सिर मुंडवाने,
जाना था बाजार,
भाड़े का टट्टू मंगवाया,
बिगड़ गई थी कार.

ज्यों ही चढ़ कर वापस लौटे,
बादल गड़गड़ बोले,
टट्टू जी अड़ गए वहीं पर,
पड़े तड़ातड़ ओले!

—मंगरूराम मिश्र

अकल का

भैंस खड़ी, मुसका कर बोली,
"हूं तो काली काली,
लेकिन दूध धूप-सा धौला,
ताकतवर गुणशाली!

"गुण देखो, रे नन्हे-मु
मत देखो तुम रंग;
पी लो दूध, छुड़ा लो अप
लगा अकल में जंग!"

—याद

अकल का जंग

भैंस खड़ी, मुसका कर बोली,
"हूं तो काली काली,
लेकिन दूध धूप-सा धौला,
ताकतवर गुणशाली!

"गुण देखो, रे नन्हे-मुन्नो,
मत देखो तुम रंग;
पी लो दूध, छुड़ा लो अपना
लगा अकल में जंग!"

—यादराम 'रसेंद्र'

खबर नई क्या आई

पुस्तक-पट्टी ले शाला को
जाते बंदर चार;
फटफटिया से भालू उतरा,
लिए हुए अखबार.

बोला, "मुझको आंखों से अब
देता कम दिखलाई,
पढ़कर तुम्हीं सुनाओ, भैयन,
खबर नई क्या आई?"

खतम हो गया तेल

मोटर में चढ़ चूहे भाई,
जाते थे बाजार;
खरहा हाथ दिखा कर बोला,
"मुझे बिठा लो यार!"

चूहे ने चतुराई का तब
खूब दिखाया खेल,
बोला, "इसके बैल मर गए,
देना जरा धकेल!"

—पंकज गोस्वामी

हाथियों से बदला (पृष्ठ ४३ से आगे)

लगा कर अभिवादन किया: "मक्खी रानी को प्रणाम!"

"क्या है, झटपट बोल?" महारानी चिल्लाई.

"मुझे थोड़ा-सा शहद चाहिए हाथियों से बदला लेने के लिए!" खरगोश ने कहा. और फिर उस पर और उसके साथियों पर जो गुजरी थी, कह सुनाई.

"क्या शहद खा कर हाथियों से लड़ने जाओगे? लोग तो दूध पी कर लड़ने जाते हैं, नन्हे जी. और शहद क्या यों ही मिल जाता है? कहीं और का रास्ता देखो..." मक्खी रानी ने उपेक्षा से झिड़का, "दो दिन का छोकरा, चला है हाथियों से युद्ध करने!"

नन्हे खरगोश को बड़ा गुस्सा आया. सीधी उंगली घी नहीं निकलता, उसने सोचा, तब फिर सीधी उंगली शहद कैसे निकल सकता है!

कुछ देर आराम से बैठ कर उसने सोचा और फिर कुछ दूर जा कर चुपचाप लकड़ियां इकट्ठी करने लगा. जब उसने काफी लकड़ियां इकट्ठी कर लीं, तो उन्हें एक एक कर के चुपचाप ला ला कर पेड़ के नीचे रखने लगा. सूखी और चटखने वाली लकड़ियों का अच्छा-खासा ढेर पेड़ के नीचे इकट्ठा हो गया. अपने काम में मशगूल मक्खियां इस ओर से बेखबर थीं. उन्हें तब पता चला, जब उन्होंने अपने शरीरों में एक तेज गर्मी महसूस की. ध्यान पेड़ से नीचे की ओर गया, तो सबके होश उड़ गए. सूखी लकड़ियों के एक बड़े ढेर में आग चटक चटक कर जल रही थी और धीरे धीरे ऊपर उठती आ रही थी. कुछ ही देर में आग और बढ़ी और मक्खियां उड़ उड़ कर इधर-उधर भागने लगीं और कुछ ही देर में छत्ता मक्खियों से खाली हो गया.

अब नन्हे खरगोश को एकाएक खयाल आया कि छत्ता तो आग और धुएं की गर्मी से खाली हो गया, लेकिन वह अब भी ऊंचे पेड़ के तने पर लगा हुआ है. इतनी ऊंचाई से उसे कैसे नीचे लाया जाए? सोचते सोचते नन्हे खरगोश को अपनी एक पुरानी सहेली गिलगिल गिलहरी की याद आई. वह उसी से मिलने चल पड़ा.

गिलगिल गिलहरी का मकान खरगोशों की बस्ती के पास एक बड़े पेड़ के खोखले तने में था. एक घंटे की लंबी दौड़ के बाद, जब वह अपनी बस्ती में पहुंचा, तो उसे यह देख कर आश्चर्य न हुआ कि खरगोशों का काफिला वहां से कहीं दूर कूच कर गया था और खरगोशों का दूर दूर तक कहीं नामो-निशान न था. 'डरपोक कहीं के!' नन्हे खरगोश ने मन ही मन कहा, 'मैं भी इन्हें दिखा दूंगा कि अक्ल बड़ी है या भैंस! यानी खरगोश बड़ा है या हाथी!'

उसने अपनी मित्र गिलगिल के घर की ओर कदम बढ़ाए. कुछ ही दूर जाने पर वह पेड़ दिखाई दिया. नन्हे खरगोश ने आवाज लगाई: "गिलगिल कुमारी हैं?"

आवाज सुन कर गिलगिल गिलहरी बाहर निकल आई और नन्हे खरगोश के निकट आती हुई बोली, "कहो, क्या हाल-चाल है, नन्हे राम! काफी दिनों में दिखाई दिए!"

"मेरे साथ आओ," नन्हे ने कदम बढ़ाते हुए कहा.

यह सुन कर गिलगिल गिलहारी नन्हे खरगोश के साथ साथ चल दी. कुछ दूर आने पर नन्हे खरगोश ने कहा, "बात यह है, मैंने तुम्हारे घर के नजदीक तुम्हें पूरी बात इसलिए नहीं बताई कि कहीं तुम्हारी मां न सुन ले."

"बात क्या है?" गिलगिल की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी.

"मेरी सहायता करनी है."

"कैसी सहायता? तू चाहे तो मेरी जान भी ले ले!"

"अरी, जान का क्या करूंगा! जरा मधु मक्खियों का एक छत्ता पेड़ से तोड़ना है."

"बाप रे बाप!" गिलगिल ने डर से आंखें फाड़ कर कहा, "यह तुझे क्या सूझी? मक्खियां चिपट गईं, तो सारे शरीर में ऐसी हवा भर देंगी कि फूल कर फुटबाल हो जाएगा!"

"अरी, उन्हें तो मैंने पहले ही आग लगा कर उड़ा दिया है. अब तो बस पेड़ पर चढ़ कर उनका छत्ता ही तोड़ना है," खरगोश ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "झटपट आ!"

फिर दोनों तेजी से भागते भागते मक्खियों के छत्ते की ओर चले. थोड़ी ही देर में वे वहां जा पहुंचे.

नन्हे खरगोश ने रास्ते में पूरी योजना गिलगिल गिलहरी को समझा दी थी और साफ साफ बतला दिया था कि यदि छत्ता नीचे न उतारा गया, तो उसकी नाक कट जाएगी.

शहद के छत्ते को नीचे गिराने के लिए गिलगिल को ज्यादा प्रयत्न नहीं करना पड़ा. मक्खियां तब तक सब उड़ ही चुकी थीं. दो-तीन बार कुतरने से ही छत्ता नीचे आ गिरा. खुश हो कर खरगोश ने एक किलकारी मारी और हवा में उछल कर छत्ते के नजदीक जा पहुंचा.

पेड़ से गिलगिल भी उतर कर नीचे आ गई और दोनों मिल कर छत्ते को झाड़ियों की ओर घसीट ले गए. वहां एक बड़ा बाल्टीनुमा बर्तन पहले ही रखा हुआ था. दोनों तुरंत शहद निकालने पर जुट गए. छत्ता काफी बड़ा था, पूरा बर्तन शहद से लबालब भर गया.

अब नन्हे खरगोश ने गिलगिल को आगे की योजना समझाई. और वे दोनों बर्तन को खिसका कर हाथियों की बस्ती की ओर ले चले. हाथियों की बस्ती यहां से कोई

अधिक दूर न थी. जल्दी ही दोनों
साथ लिये वहां जा पहुंचे और एक

सामने ही पेड़ों से घिरे मैदान
बीच अलसाए हाथी ऊंघ रहे थे. ए
की नजर उस छोटे हाथी पर पड़ी जि
ही देख चुका था. वह इधर-उधर
जबकि अन्य हाथी अलसाए हुए-
बैठे-लेटे थे. उस पर नजर पड़ते
न में फिर एक बार खुशी की ल
गिलगिल को वह नन्हा हाथी दिखा

फिर उसके कान में आगे की
रोकने पर भी गिलगिल को
हो-हो' कर हंसने लगी.

"पागल हो गई हो?" नन्हा खर
ओर से मत हंसो, झटपट काम में ल

गिलगिल ने हंसी रोक कर
में डुबो दी और फिर चुपके-से
हाथियों की ओर बढ़ी. वह हर एक
जाती और चुपके से अपनी पू
डाल कर निकाल लेती और जब त
मक्खी जैसी मामूली चीज को उड़ा
हाथी की सूंड पर दिखाई पड़ती.
शहद खत्म हो जाता, वह भागती
रखे शहद के बर्तन में फिर अप
और इस प्रकार उसने कई बार कि
हाथियों की सूंडों में शहद लग चु
लपट कर गिलगिल अपने मित्र

"अब यहां से चलो," उसका
बोला, "और हां, यह तो बताओ
कर देखा है?"

"हां!" गिलगिल ने खुशी से

"तो एक लकड़ी हाथ में ले ल
डुबो कर शहद की एक रेखा हाथि
दूर तक खींचती चली जाओ. इस क
मदद करूंगा," नन्हे खरगोश ने कहा

दोनों काम पर जुट गए. वहां
अधिक दूर नहीं था. लकड़ी
कर जमीन पर एक लाइन के रूप
था, जिससे कुछ ही देर में चींटियों
शहद की एक सड़क-सी बनती चली
चींटियों की सेनाएं शहद की खु
घरों से बाहर निकल पड़ीं और दूर
पर हाथियों के नजदीक फैलने लगीं.

यह देख कर नन्हे खरगोश ने
पांव रख कर भागो!"

"यह तरीका मुझे नहीं आता

अधिक दूर न थी. जल्दी ही दोनों मित्र शहद का बर्तन साथ लिये वहां जा पहुंचे और एक झाड़ी में छिप गए.

सामने ही पेड़ों से घिरे मैदान में दिन भर के थके-मांदे अलसाए हाथी ऊंघ रहे थे. एकाएक नन्हे खरगोश की नजर उस छोटे हाथी पर पड़ी जिसे वह एक बार पहले भी देख चुका था. वह इधर-उधर डोलता फिर रहा था, जबकि अन्य हाथी अलसाए हुए-से जमीन पर औंधे सीधे बैठे-लेटे थे. उस पर नजर पड़ते ही नन्हे खरगोश के मन में फिर एक बार खुशी की लहर दौड़ गई. उसने गिलगिल को वह नन्हा हाथी दिखाया.

फिर उसके कान में आगे की योजना समझाई, तो काफी रोकने पर भी गिलगिल को हंसी आ गई. वह 'हो-हो' कर हंसने लगी.

"पागल हो गई हो?" नन्हा खरगोश बिगड़ा, "इतनी जोर से मत हंसो, झटपट काम में लग जाओ."

गिलगिल ने हंसी रोक कर पूंछ शहद के बर्तन में डुबो दी और फिर चुपके-से आराम करते हुए हाथियों की ओर बढ़ी. वह हर एक की सूंड के नजदीक जाती और चुपके से अपनी पूंछ उसकी सूंड में डाल कर निकाल लेती और जब तक महाबली हाथी इस मक्खी जैसी मामूली चीज को उड़ाए, तब तक वह दूसरे हाथी की सूंड पर दिखाई पड़ती. जब पूंछ में लगा हुआ शहद खत्म हो जाता, वह भागती हुई जाती और झाड़ी में रखे शहद के बर्तन में फिर अपनी पूंछ डुबो लाती. फिर इस प्रकार उसने कई बार किया. अब लगभग सभी हाथियों की सूंडों में शहद लग चुका था. अपना काम निपटा कर गिलगिल अपने मित्र के पास भाग आई.

"अब यहां से चलो," उसका नन्हा मित्र खरगोश बोला, "और हां, यह तो बताओ, तुमने चींटियों का घर देखा है?"

"हां!" गिलगिल ने खुशी से चीख कर कहा.

"तो एक लकड़ी हाथ में ले लो और शहद में डुबो डुबो कर शहद की एक रेखा हाथियों से चींटियों के घर तक खींचती चली जाओ. इस काम में मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा," नन्हे खरगोश ने कहा.

दोनों काम पर जुट गए. वहां से चींटियों का घर अधिक दूर नहीं था. लकड़ी में शहद लगा लगा कर जमीन पर एक लाइन के रूप में टपकाया जा रहा था, जिससे कुछ ही देर में चींटियों के घर से हाथियों तक शहद की एक सड़क-सी बनती चली गई. अब क्या था! चींटियों की सेनाएं शहद की खुशबू पाते ही धड़ाधड़ घरों से बाहर निकल पड़ीं और दूर तक शहद की लाइनों पर हाथियों के नजदीक फैलने लगीं.

यह देख कर नन्हे खरगोश ने कहा, "अब सिर पर पांव रख कर भागो!"

"यह तरीका मुझे नहीं आता!"

"अरे भई, सिर पर पांव रख कर भागने का मतलब है, तेजी से यहां से दूर भाग चलो," नन्हे खरगोश ने झुंझला कर कहा.

और फिर दोनों ने एक बार हाथियों की ओर देखा, चींटियों की सेना हाथियों तक खींची गई शहद की लाइन पर बढ़ती जा रही थी. नन्हा खरगोश और गिलगिल एक साथ तेजी से भागे और भागते रहे.

काफी दूर निकल आने पर गिलगिल ने सांस लेते हुए रुक कर कहा, "क्या गजब की तरकीब निकाली है, मेरे यार, तूने भी!"

गिलगिल अभी इतना कह भी न पाई थी कि एकाएक जंगल में किसी हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी. फिर कई एक हाथी चीखते-चिंघाड़ते प्रतीत हुए.

दूर, हाथियों के मैदान में मानो प्रलय आ गई थी. हाथी पागल हो हो कर इधर-उधर भाग रहे थे और पेड़ों से सिर टकरा रहे थे. कुछ दम तोड़ रहे थे, कुछ दम तोड़ चुके थे. उनकी चीखों और चिंघाड़ों से पूरा जंगल गूंज उठा.

एकाएक गिलगिल गिलहरी और नन्हे खरगोश को अपने नजदीक की धरती हिलती मालूम हुई. वे दोनों डर के मारे भाग कर एक झाड़ी में जा दुबके. एक हाथी चिंघाड़ता हुआ उनके ठीक बराबर से पागलों की तरह भागा चला गया. फिर वे दोनों वहीं दुबके हुए हाथियों की चीखें-चिंघाड़ें सुनते रहे.

धीरे धीरे रात हो गई. दिन भर की मेहनत के कारण उन दोनों को नींद आ गई.

अगले दिन, सबेरे उठ कर दोनों छिपते छिपते हाथियों की बस्ती में जा पहुंचे. झाड़ी में छिप कर दोनों ने देखा, शहद की लकीर पर चींटियां अभी तक रेंगती फिर रही हैं और मैदान में बारह-तेरह हाथी मरे पड़े हैं.

"चींटी से मारे जाने वाले इस जानवर की यह मजाल कि नन्हे खरगोश से टक्कर ले!" नन्हे खरगोश ने सीना फुला कर मृत हाथियों की ओर देखते हुए कहा, "प्रिय गिलगिल, हम विजयी हुए!"

मगर गिलगिल वहां नहीं थी. नन्हे खरगोश ने चारों ओर नजर घुमा कर देखा. सहसा, उसकी दृष्टि हाथी के उस छोटे-से बच्चे पर पड़ी, जिसे वह पहले भी कई बार देख चुका था और जिसे देख कर उसे खुशी महसूस होती थी. गिलगिल ने उसकी सूंड में शहद नहीं लगाया था. अतएव वह चींटियों के काटने से बचा रहा. वह मृत हाथियों के इर्द-गिर्द मस्ती से डोलता फिर रहा था और गिलगिल उसके मस्तक पर सवार हो कर गाना गा रही थी, "चल मेरे घोड़े टिम्मक टूं!" उसे देख कर नन्हा खरगोश फुदक कर झाड़ी से बाहर निकल आया. ●

३ हनुमान चौक, देहरादून.

उड़ने वाली चिड़िया

• अरुणकुमार

लो, भई, यह उड़ने वाली चिड़िया अब तुम्हारी गोदी में आ गई. यह फरफर करती है, उड़ती है, हवा में कुलांचे भरती है. करना भी तुम्हें कुछ ज्यादा नहीं है. बस, जो तरकीब लिखी है उस पर हूबहू अमल करो, चिड़िया पर तुम्हारा अधिकार हो जाएगा. जब चाहो खिलौनों के डिब्बे से निकालो और अपने दोस्तों व भाई-बहनों के सामने उड़ाओ. हां, जब वे अपने आप उड़ाने के लिए मांगें, तो उदारता के साथ उन्हें भी उड़ाने दो.

बनाने की तरकीब :

सामने के पृष्ठ पर जो गोल चित्र दिया हुआ है, उसे 'पराग' से काट कर अलग कर लो. इसमें तो तुम अब तक माहिर हो ही गए होगे. तो लो अब इस चित्र के पीछे गोंद या लेई लगाओ. एक पोस्ट कार्ड जितना मोटा गत्ता या दफ्ती लो. अगर रंगीन हो, तो अच्छा [illegible]. उसके ऊपर इस चित्र को सफाई के साथ चिपका दो. मुलायम कपड़ा इसके ऊपर फेर कर, चिपकने के समय पड़ने वाली सब सलवटें निकाल डालो. अब इसे दो-चार भारी पुस्तकों के बीच [illegible] दो. चार-छह घंटे बाद निक[illegible] एकदम सूख गया है या नहीं [illegible] कुछ समय और सूखने के लिए [illegible]

जब चित्र [illegible] जाए, तो [illegible] पर चित्र को [illegible] से सही [illegible] इसके बाद एक [illegible] या तेज [illegible] दोनों दा [illegible] इस तरह [illegible] अंत तक ले जा[illegible] रेखाएं [illegible] फिर एक लंबी [illegible] लो, जै[illegible]

kissekahani.com

नमूना आकृति